

ईसा मसीह
का लाल
सागर में
दफ़नाया
जाना



डेयान डेलकेव
एड्रियन ईबेन्स

देयान देलचेव

एड्रियन एबेंस

ईसा मसीह का लाल सागर में दफ़नाया जाना



Maranathamedia.com

April, 2019

सामग्री

यूसुफ और मूसा के बीच का इतिहास.....	1
मिस्र में ईसा मसीह की सलीबदारी.....	3
क्रूस के प्रकाश में.....	9
निर्गमन और फसह का समय.....	11
फिरौन अपने हृदय की कठोरता को प्रकट करता है.....	17
इस्राएल अभी भी मिस्र के देवताओं के अधीन है.....	18
मूसा में बपतिस्मा.....	19
अभयारण्य में रास्ते की तरह समुद्र में परमेश्वर का रास्ता.....	21
अपना हाथ समुद्र के ऊपर फैलाएं.....	25
ईसा मसीह का लाल सागर दफन.....	27
निष्कर्ष.....	31

यूसुफ और मूसा के बीच का इतिहास

यूसुफ के समय और मूसा के समय के बीच का समय एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अवधि है। इसे सही ढंग से समझने से बाद की घटनाओं और ईश्वर के अपने बच्चों (मानव परिवार से) प्रति व्यवहार पर प्रकाश पड़ेगा। यहाँ ईश्वर के इस्राएल के साथ व्यवहार के दृष्टिकोण से इस अवधि की कहानी है:

अगर इब्राहिम के वंशज अन्य राष्ट्रों से अलग रहते, तो वे मूर्तिपूजा में ग्रसित न होते। अन्य राष्ट्रों से अलग रहकर, उनके लिए उनकी पापी प्रथाओं में शामिल होने और ईश्वर के खिलाफ विद्रोह करने का एक बड़ा तिकड़ा हटा दिया जाता। **आसपास के राष्ट्रों के साथ मिलने से उन्होंने अपना विशिष्ट, पवित्र चरित्र बहुधा खो दिया। उन्हें सजा (दुःख देकर) के लिए, ईश्वर ने उनकी भूमि पर अकाल ला दिया** (उनके पाप की प्राकृतिक विकास को प्रकृति में प्रकट होने की अनुमति दी), **जिससे उन्हें अपने जीवन को बचाने के लिए मिस्र में जाना पड़ा।** लेकिन ईश्वर ने इब्राहिम के साथ अपने वचन के कारण उन्हें मिस्र में नहीं छोड़ा। उन्हें मिस्रियों द्वारा दबाए जाने की अनुमति दी गई, ताकि वे अपनी परेशानी में उनके पास लौट सकें, उनके धर्म और करुणामयी सरकार को चुन सकें, और उनकी मांगों का पालन करें। {SR 147.1}

पहले केवल कुछ परिवार मिस्र गए थे। यह संख्या बहुत बढ़कर एक बड़ी भीड़ बन गई। कुछ अपने बच्चों को ईश्वर के विधान में सिखाने का ध्यान रखते थे, लेकिन बहुत से इस्राएली इतनी मूर्तिपूजा देख चुके थे कि उनके ईश्वर के विधान के बारे में भ्रमित विचार थे। जो ईश्वर से डरते थे, वे अपनी आत्मा की वेदना में उनसे पुकारते थे कि वे उनका भारी गुलामी का योक तोड़ें और उन्हें अपनी बंधुत्व की भूमि से बाहर ले आएँ, ताकि वे उनकी सेवा करने के लिए स्वतंत्र हो सकें। ईश्वर ने उनकी पुकार सुनी और मूसा को अपने लोगों की मुक्ति के काम को पूरा करने के लिए अपना औज़ार बनाया। जब वे मिस्र से निकले और लाल सागर के जल के सामने उनके लिए बाँट दिए गए, तो ईश्वर ने उन्हें परीक्षा दी कि क्या वे उस पर भरोसा करेंगे जिसने उन्हें, एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से, चिह्नों, परीक्षाओं और चमत्कारों से ले आया था। लेकिन वे परीक्षा सहन नहीं कर सके। रास्ते में कठिनाइयों के कारण वे ईश्वर के खिलाफ गुनगान करते थे और फिर से मिस्र जाने की इच्छा रखते थे। {SR 147.2}

हमें नहीं बताया गया है कि क्या यूसुफ के समय अकाल केवल इस्राएल के धर्मत्याग के कारण आया, लेकिन यह मिस्र और कनान की पूरी भूमि को ढक गया (प्रेरितों के कार्य 7:11)। इस स्थिति में, ईश्वर ने यूसुफ का उपयोग किया, ताकि वे दोनों, इस्राएल और मिस्र, जीवन के विधान से अपनी असंगतता को देख सकें। चलिए मिस्र की भूमि में यूसुफ के प्रभाव पर विचार करें:

तब उसने [ईश्वर] एक मनुष्य को, यूसुफ को उनके पहले भेजा, जो गुलाम बनने के लिए बेचा गया था। उसके पैरों में बेड़ियां पहिनायी गई; उसकी गर्दन लोहे के सांकलों में जकड़ दी गई। जब तक उसका कथन पूरा न हुआ, तब तक प्रभु का वचन उसे कसौटी पर कसता रहा। तत्पश्चात् राजा ने सैनिक भेजा और उसे छुड़ा लिया, प्रजा के शासक ने उसे बन्धनमुक्त किया; उसने उसे अपने महल का स्वामी, और अपनी समस्त सम्पत्ति का शासक नियुक्त किया, **कि वह अपनी इच्छानुसार उसके अधिकारियों को आदेश दे, और उसके मंत्रियों को सलाह दे।** भजन संहिता 105:17-22

फिरऔन और मिस्र के बड़े लोग ईश्वर की बुद्धिमान शासन के बारे में अनजाने नहीं थे। उन्हें ईश्वर के प्रति, उनके धर्मी शासन के प्रति, और उनके विधान के दावों के प्रति संकेत करते हुए एक उज्ज्वल प्रकाश शताब्दियों से चमक रहा था। **यूसुफ और मिस्र में इस्राएल के बच्चों ने ईश्वर की जानकारी दी थी।** {YI अप्रैल 8, 1897, पैरा. 1}

क्या मिस्र का एक हिस्सा अपने ऐसे देवताओं की पूजा करने की बेवकूफी नहीं देख चुका था, क्या वे पश्चाताप नहीं कर चुके थे, तो पूरा राष्ट्र नष्ट हो गया होता। लेकिन मिस्र इस्राएल के लिए एक शरणस्थान रहा था। यहाँ यूसुफ का भक्तिमय चरित्र और स्वर्ग से दिए गए ज्ञान का पता लगाया, सम्मानित और उच्चता प्राप्त की गई थी। यहाँ ईश्वर को उन लोगों द्वारा सम्मान दिया गया था जो उनके प्रति वफादार और सच्चे थे। और ईश्वर, जो धीरे रूप से क्रोधित होता है और अधिकार में करुणामयी है, धीरे-धीरे चलता था, उन्हें समय देता था, अपनी इच्छा के प्रति आत्मसमर्पण करके अपने और अपनी संपत्ति को पूरी तरह से नष्ट होने से बचाने के लिए। उनमें से कई ने इस्राएल के अदृश्य ईश्वर को सार्वभौम महाराज के रूप में स्वीकार किया। जो पश्चाताप करते थे, वे अपनी संपत्ति का एक हिस्सा, अपने झुंड और झोंट बचा लेते थे। नम्र और आज्ञाकारी लोग प्रभावशाली थे, जिन्हें यूसुफ के जीवन और उदाहरण से बहुत लाभ हुआ था, और उसके माध्यम से उन्हें ईश्वर और उसके कार्यों की जानकारी मिली थी। {YI अप्रैल 15, 1897, पैरा. 3}

केवल अनंत काल ही इस आदमी के पवित्र प्रभाव की चौड़ाई को पूरी तरह से उजागर करेगा। ईश्वर अपने प्रिय बच्चों को मिस्र में यूसुफ के माध्यम से पहुँच रहा था, लेकिन एक राष्ट्र के रूप में उन्हें यह तय करना पड़ा कि क्या वे वास्तव में उसका पालन करना चाहते थे।

मिस्र के पुजारी चालाक थे। वे चाल और दुर्भावना से शासन करते थे। उन्होंने भव्य मंदिर बनाए और उन्हें पवित्र वनों से घेरा। उनके मंदिर के आंगन उनके लिए कला और धन से जो संभव था वही थे; उनकी वास्तुकला भव्य थी। लेकिन उस घरे के अंदर क्या था? आकाश और धरती बनाने वाले ईश्वर के स्थान पर, उन्होंने जानवरों को अपनी पूजा का लक्ष्य चुना था। **पुजारियों और पूजारियों द्वारा, यूसुफ द्वारा बढ़ाया गया जीवन्त ईश्वर, प्रेम और अनुकंपा का विषय नहीं माना गया, बल्कि तीव्र घृणा का विषय था।** वे उन लोगों की तरह थे जिनका शास्त्र बताता है, जो कहते हैं, "इस्राएल के पवित्र व्यक्ति को हमारे सामने बंद करो;" "क्योंकि हम तुम्हारे रास्तों की जानकारी नहीं चाहते।" {YI अप्रैल 8, 1897, पैरा. 2}

शैतान ने पुजारियों के माध्यम से बहुत जोर से अनैतिकता और धोखाधड़ी, अन्याय और अपराध को सम्मानित करने के लिए काम किया, क्योंकि ये यूसुफ, ईश्वर के प्रकाश-वाहक, के जीवन, चरित्र और प्रभाव के विपरीत थे। ठीक उस समय जब स्वर्ग का प्रकाश उन पर अलग-अलग किरणों में चमक रहा था, शैतान जादूगरों और जादूगरों, पुजारियों और शासकों के माध्यम से काम कर रहा था, ताकि मिस्रियों में ईश्वर के खिलाफ घृणा जागृत कर सके। उनकी घटिया कल्पना को खुला छोड़ दिया गया था; उनके देवता जानवर थे, और वे जो काम उनके हाथों ने बनाए थे। इसी वजह से इस्राएलियों को अपनी बलि की पेशकश रोकनी पड़ी; क्योंकि मिस्रियों को उन जानवरों को मारे जाने को देखने से घृणा होती जिनकी वे पूजा करते थे। {YI अप्रैल 8, 1897, पैरा. 3}

जब यूसुफ का परिवार मिस्र की भूमि में बस गया, तो वे बढ़ते गए और समृद्ध हुए, और यह उनके मेजबानों के लिए एक अतिरिक्त तिकड़ा बन गया:

यूसुफ का सम्मानित स्थान, जो मिस्र के बुद्धिमान लोगों से जुड़ा हुआ था, **हिब्रू राष्ट्र को बढ़ावा देता था; और उसके लिए उन्हें बहुत सम्मान दिखाया गया।** उनके पुरुष धनवान हो गए, झुंड और झोंट के मालिक; उनकी महिलाएं सूती कपड़े पहनती थीं; उनकी बुनाई और रुई में बने कढ़ाई जैसे काम **मिस्रियों के दिलों में ईर्ष्या और जलन जगा देते थे।** इस्राएलियों को एक लोगों के रूप में देखा

जाता था, जो जब तक दबाए नहीं जाते, वे मिस्र पर शासन करेंगे। उनकी मेहनती आदतों ने मिस्रियों को उन्हें गुलाम बनाने का विचार दिया। इस प्रकार न केवल उनकी श्रम की कुशलता, बल्कि उनकी सारी संपत्ति भी राजकीय खजाने को समृद्ध करने के लिए जाएगी। इस तरह मिस्र के पुजारी उस ईश्वर के प्रति निंदा करने की उम्मीद कर रहे थे, और अपने देवताओं को सम्मानित और उच्चता प्रदान करने की उम्मीद कर रहे थे। {YI अप्रैल 8, 1897, पैरा. 5}

ऐसा लगता था कि इस महान राष्ट्र के पुजारी सफलतापूर्वक लोगों को अपनी नीची धर्म में वापस ले रहे थे:

राजगद्दी के उत्तराधिकारी को मूर्तिपूजा के रीति-रिवाजों और कर्मकांडों में शिक्षित और प्रशिक्षित किया गया था। इससे वह स्वर्ग के ईश्वर का एक पक्का विरोधी बन जाएगा। शैतान ने देखा कि उसका भूमि खो रही थी, और अब उसने अपनी शक्तियों को नीचे से उठाया और बुरे लोगों के साथ मिलकर सत्य और धर्म के खिलाफ युद्ध करने के लिए। राष्ट्र के बुद्धिमान लोग राजा को शिक्षित करने के लिए लगे रहते थे, कि वे केवल आदर नहीं, बल्कि अपने वचन के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता माँगे, खुद को ईश्वर के रूप में देखे, और अपने लोगों के शरीर और आत्मा को अपने अधिकार में माने। उसे यह सिखाया गया कि उसके आवेग और इच्छाएं उसका मार्गदर्शन करनी चाहिए। इस सभी शिक्षा का उद्देश्य यूसुफ के द्वारा अपनी सावधानीपूर्वक जीवन से प्राप्त प्रभाव को रोकना था। {YI अप्रैल 8, 1897, पैरा. 6}

इस संघर्ष में, स्वर्ग की शक्तियों और अंधकार की सेना के बीच, ईसा मसीह अपने बच्चों के लिए लड़ रहे थे, चाहे मिस्री हों या इस्राएली:

ईसा मसीह ने मिस्र के हर आत्मा के लिए मरा, और हर आत्मा को प्रकाश मिलना था। धर्मी लोगों को बुरे लोगों से नहीं बाहर रखा जाना था, बल्कि ईश्वर की शक्ति से पापी के ढंग और धब्बे से बचाया जाना था। {YI अप्रैल 15, 1897, पैरा. 7}

मिस्र में ईसा मसीह की सलीबदारी

मिस्र में हुए प्लेगों के दौरान क्या हुआ, इसकी निकट समीक्षा से हमें यह निष्कर्ष निकलना चाहिए कि ईसा मसीह को वहाँ आत्मा में सलीब पर चढ़ाया गया था:

इनकी लाशें उस महानगर के चौक में पड़ी रहेंगी, जो लाक्षणिक भाषा में सदोम या मिस्र कहलाता है और जहाँ इनके प्रभु को क्रूस पर चढ़ाया गया था। प्रकाशन 11:8

इस पाठ की इस समझ का एडवेंटिस्ट पायोनियरों के इस संदर्भ के साथ कोई टकराव नहीं है — जो रहस्यमय वाक्य (प्रकाशन) 11 में फ्रांसीसी क्रांति के समय को संदर्भित करता है। ईसा मसीह को नास्तिवाद के उदय के साथ फ्रांस में सलीब पर चढ़ाया गया था, लेकिन प्रेरित यूहन्ना ने यूसुफ के द्वारा मिस्र में ईसा मसीह की दुःख के आधार पर लिखा।

ईश्वर ने मूसा को पहले से बताया था कि उनके पुत्र की सलीबदारी कैसे होगी:

प्रभु ने मूसा से पूछा, 'तेरे हाथ में यह क्या है?' उन्होंने उत्तर दिया, 'लाठी।' प्रभु ने कहा, 'इसे भूमि पर फेंक दे।' मूसा ने उसे भूमि पर फेंका तो वह सर्प बन गई। मूसा उसके सम्मुख से हट गए। तत्पश्चात् प्रभु ने उनसे पुनः कहा, 'अपना हाथ वस्त्र के भीतर छाती पर रख।' मूसा ने वस्त्र के भीतर छाती पर अपना हाथ रखा। जब उन्होंने उसे बाहर निकाला तब उनका हाथ बर्फ के समान कोढ़ जैसा सफेद हो गया। निर्गमन 4:2-3,6

इन चमत्कारों से केवल इस्राएल को यह विश्वास होना चाहिए था कि ईश्वर उन्हें मिस्र से बाहर ले जाएगा, बल्कि इसने उन्हें यह भी दिखाया कि उनके धर्मत्यागी लोगों को गुलामी के घर से कैसे छुटकारा मिलेगा। ईश्वर की शक्ति, जो ईसा मसीह है (1 कोरिंथियों 1:24), यहाँ मूसा के हाथ में डंडे या दंड (संख्या 24:17) के प्रतीक के रूप में दिखाई गई है, जो ज़मीन पर फेंकी गई और साँप में बदल गई। चूँकि साँप यहाँ शैतान का प्रतीक है (प्रकाशित वाक्य 20:2), यहाँ हमें बताया गया है कि इस्राएल को मिस्र से मुक्ति इस बात के माध्यम से मिलेगी कि शैतान को ईश्वर की शक्ति का उपयोग करने की अनुमति दी जाए जो मिस्रियों और प्रकृति में थी। हाथ का दूसरा चमत्कार, जिसमें हाथ लेपरोसी बन गया, यह दिखाता है कि ईश्वर की दायाँ हाथ, जो ईसा मसीह है, ईश्वर की शक्ति (लूका 22:69), लेपरोसी और बेजान हो जाएगी क्योंकि यह ईसा मसीह की शक्ति थी जिसे शैतान

और मिस्रियों द्वारा उपयोग किया जाएगा और इसका उपयोग उनके चरित्र के अनुसार नहीं होगा ।।
ऐसा इसलिए होगा क्योंकि ईश्वर जानता था कि फिरऔन इस्राएलियों को स्वतंत्रता देने के उनके
आग्रह को स्वीकार नहीं करेगा और इस प्रकार ईसा मसीह की शक्ति मिस्रियों और उनकी भूमि में
पूरी तरह से शैतान द्वारा उन्हें नष्ट करने के लिए गलत तरीके से इस्तेमाल की जाएगी । इस्राएल और
मिस्र दोनों अपने पापों के कारण एक उद्धारक की जरूरत रखते थे, लेकिन केवल इस्राएल ने ही
ईश्वर को उनके लिए काम करने दिया, क्योंकि केवल उन्होंने ही अपने पिता के प्रति भले ही थोड़ी
मात्रा में भरोसा जमाया:

विश्वास के कारण उन लोगों ने लाल समुद्र को पार किया, मानो वह सूखी भूमि था और जब
मिस्रियों ने वैसा ही करने की चेष्टा की, तो वे डूब मरे । इब्रानियों 11:29

लोग थके और डरे हुए थे, लेकिन अगर वे मूसा के आगे बढ़ने के आदेश पर पीछे हट जाते, तो
ईश्वर कभी भी उनके लिए रास्ता नहीं खोलता । यह “विश्वास” से था कि “वे सूखी भूमि की तरह
लाल सागर पार कर गए ।” हिब्रू 11:29। {PP 290.1}

ईश्वर को नाशक से दोनों, मिस्र और इस्राएल को बचाने की अनुमति देने के बजाय, मिस्र इस प्रकार
इस्राएल का कीमत बन गया, जिससे पता चलता है कि ईसा मसीह को उनके द्वारा पूरी तरह से
सलीब पर चढ़ाया गया था:

क्योंकि मैं तेरा प्रभु परमेश्वर हूँ; मैं तुझे बचानेवाला, इस्राएल का पवित्र परमेश्वर हूँ । मैंने तेरे
विमोचन के मूल्य में मिस्र देश दिया है, तेरे बदले में इथियोपिया और सबा देश दिए हैं । यशायाह
43:3

मिस्र में प्लेगों के बारे में अधिक जानकारी के लिए *Calvary in Egypt* पढ़ें जो
maranathamedia.com पर मिलता है ।

मिस्र को ईश्वर के द्वारा इब्राहिम और फिर यूसुफ के माध्यम से बहुत प्रकाश मिला था, लेकिन उन्होंने उस प्रकाश को अस्वीकार कर दिया और अब शैतान उन पर अधिक शक्ति पा रहा था। ईसा मसीह की मिस्रियों में अपने पापी जीवनो के माध्यम से सलीबदारी, प्लेगों के द्वारा प्रकृति में भौतिक रूप से प्रकट हुई और इसने यह पुष्टि की कि गुल्लीवर पर ईसा मसीह की सलीबदारी पाप के बहुत पहले से ही हो रहे उनके दुःख के लिए हमारी धीमी इंद्रियों को जानकारी देने की थी:

सारे स्वर्ग ने ईसा मसीह की वेदना में दुःख उठाया; लेकिन उस दुःख का आरंभ या अंत मानवता में उनके प्रकट होने से नहीं हुआ। सलीब हमारी धीमी इंद्रियों को यह प्रकट करता है कि पाप के उद्भव से ही ईश्वर के दिल में क्या दर्द आया है। {Ed 263.1}

आश्चर्य से फरिश्तों ने उद्धारक की निराशाजनक वेदना को देखा... **प्राणरहित प्रकृति ने अपमानित और मरते हुए सृष्टिकर्ता के साथ सहानुभूति व्यक्त की।** सूरज भयानक दृश्य को देखने से इंकार कर दिया। दोपहर के समय उसकी पूरी चमकीली किरणें पृथ्वी को प्रकाशित कर रही थीं, जब अचानक यह लगा कि यह मिट गई है। **पूर्ण अंधकार**, जैसे कोई अंत्येष्टि का पर्दा, सलीब को ढक गया। "सारी भूमि पर नौवें घंटे तक अंधकार था।" **इस अंधकार का कोई ग्रहगति या अन्य प्राकृतिक कारण नहीं था**, जो चाँद या तारों के बिना अंधेरी रात की तरह गहरा था। {DA 753.3}

ईश्वर के हाथ से, प्रकृति ईश्वर के नियमों के उल्लंघनकारियों के खिलाफ सेवा करती है। वह अपने **विनाशकारी तत्वों को अपने गले में रखती है**, जब तक वे आदमी को नष्ट करने और पृथ्वी को शुद्ध करने के लिए टूट नहीं पड़ते। **जब फिरऔन ने मूसा और हारून के माध्यम से ईश्वर से विरोध किया** और कहा, "मैं ईश्वर कौन हूँ जो मैं उसकी आवाज़ का पालन करूँ? मुझे ईश्वर का पता नहीं, और मैं इस्राएल को जाने नहीं दूँगा" [उत्पत्ति 5:2], **तब प्रकृति ने अपने घायल सृष्टिकर्ता के साथ सहानुभूति व्यक्त की और यहोवा के अपमान का बदला लेने के लिए ईश्वर के साथ सहयोग किया।** फिरऔन के जडबुद्धि विरोध के कारण सारा मिस्र रुखा और निर्जन हो गया। {Lt209-1899.23}

ध्यान दें कि भविष्यवाणी के आत्मा ने ईसा मसीह की दुःख के प्रति प्रकृति की प्रतिक्रिया को फिरऔन की जडबुद्धि के कारण मिस्र में हुए घटनाओं से जोड़ा है। प्रकृति खुद मिस्र की बुराई को उसके अंदर के नियमों के माध्यम से प्रकट करेगी।¹² यही वजह है कि ईश्वर ने मूसा को दिया गया

तीसरा चमत्कार जल को खून में बदलना था, इस्राएल को दिखाने के लिए, अगर वे पिछले दो चिह्नों पर विश्वास नहीं करते या उनकी आवाज़ पर ध्यान नहीं देते:

यदि वे इन दोनों चिह्नों पर भी विश्वास न करें, और तेरी बात को न सुनें तो तू नील नदी का जल लेना और उसे सूखी भूमि पर उण्डेलना। जो जल तू नील नदी से लेगा, वह सूखी भूमि पर रक्त बन जाएगा।’ निर्गमन 4:9

सूखी भूमि उन मिस्री हृदयों का प्रतिनिधित्व करती है जो आत्मा से रिक्त थे और जिन्होंने ईसा मसीह को प्रकृति में अपने भीतर सलीब पर चढ़ाए जाने के रूप में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत होने के बाद भी पश्चाताप नहीं किया। हमें नहीं बताया गया है कि क्या मूसा ने पहले इस चमत्कार को इस्राएलियों को दिखाया, लेकिन पहला प्लेग वही था:

प्रभु ने मूसा से कहा, ‘फरओ का हृदय कठोर हो गया है। वह मेरे लोगों को नहीं जाने देगा। प्रभु ने मूसा से कहा, ‘हारून से कहना : अपनी लाठी ले और अपने हाथ को मिस्र देश के समस्त जल अर्थात् नदियों, नहरों, तालाबों और जल-कुण्डों पर उठा कि जल रक्त बन जाए। तब समस्त मिस्र देश में, लकड़ी और पत्थरों के जलपात्रों का जल रक्त बन जाएगा।’ निर्गमन 7:14,19

जल को खून में बदलना उस वेदना को याद दिलाता है जिसे ईसा मसीह ने गेथसेमनी में अनुभव की थी जब उनका पसीना खून में बदल गया था क्योंकि वे मानवता के पाप के बोझ के तहत मरने के लिए तैयार थे। जब मिस्र ने यूसुफ के माध्यम से परमेश्वर की उनके प्रति देखभाल के सबसे उल्लेखनीय प्रमाण को अस्वीकार कर दिया, तब वह गंभीर बिंदु पर पहुँच गया जहाँ शैतान ने उन पर लगभग पूरी नियंत्रण पकड़ लिया था और प्रकृति के तत्वों पर।

2

इस पर अधिक जानकारी के लिए *Dominion of the Earth* पुस्तक पढ़ें जो maranathamedia.com पर मिलती है।

ईसा मसीह ने मूसा और हारून के माध्यम से उनसे बहुत दुःख के साथ अपनी अपील की, लेकिन फिरौन ने अपने जादूगरों को सुनना पसंद किया। प्लेगों को सीधे परमेश्वर से आने वाला बताया गया है क्योंकि यही तरीका था जिससे मिस्री उन्हें अपने दिव्य गुणों के बारे में अपनी निचली कल्पनाओं में अनुभव कर रहे थे, फिर भी स्वर्ग का परमेश्वर और उनका पुत्र यह निर्धारित कर चुके थे कि वे कभी बल का इस्तेमाल नहीं करेंगे:

शैतान ने परमेश्वर की सरकार के खिलाफ अपने बयान दिए, और उन लोगों का बचाव किया जो उसके साथ खड़े थे, जो परमेश्वर के खिलाफ एक लगातार आरोप था। उसकी शिकायतें और शिकायतें बेबुनियाद थीं; और फिर भी परमेश्वर ने उसे अपनी थियरी को चलाने की अनुमति दी। परमेश्वर शैतान और उसके सभी सहानुभूतिकर्ताओं को नष्ट कर सकता था ठीक वैसे ही आसानी से जैसे कोई एक गोलक उठा सकता है और उसे धरती पर फेंक सकता है। लेकिन ऐसा करके उसने बल का प्रयोग करने का एक पूर्वानुमान दे दिया होता। सभी बाध्यकारी शक्ति केवल शैतान की सरकार के अंतर्गत ही पाई जाती है। प्रभु के सिद्धांत इस क्रम के नहीं हैं। वह इस लाइन पर काम नहीं करेंगे। {RH सितंबर 7, 1897, पैरा. 7}

प्रभु अपनी शक्ति से मिस्र के शासकों को जिन्होंने अपनी पूजा में जडबुद्धि बनाई हुई थी, उन्हें अस्तित्व से मिटा सकता था; लेकिन परमेश्वर के तरीके मनुष्य के तरीके नहीं हैं। उसने हर प्लेग को अपना काम करने और मिस्रियों को प्रभावित करने का समय दिया, ताकि वे देख सकें कि एक परम शासक है जिसके प्रति हर निर्मित चीज़ झुकनी चाहिए। प्रभु ने अपने काम को पहचानने और अपनी शक्ति को महसूस कराने का समय दिया, इस्राएल राष्ट्र के लिए लाभ के लिए, और मिस्रियों को पश्चाताप करने के लिए, और उन्हें उस परमेश्वर को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करने के लिए, जिसे शैतान ने अपने महत्वपूर्ण प्रयासों से उन्हें भूलने को कहा था। {YI अप्रैल 15, 1897, पैरा. 2}

अगर शुरू से ही परमेश्वर का उद्देश्य मिस्र को नष्ट करना होता, तो वह मूसा और हारून के माध्यम से उनसे अपील नहीं करता। चूंकि प्रभु किसी भी परिस्थिति में बल का इस्तेमाल नहीं करेंगे, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि प्लेग मिस्र पर उनके पापों के कारण आए, और किसी सीधे हस्तक्षेप के कारण नहीं। जब इस्राएल मिस्र से चला गया, तो परमेश्वर ने उन्हें याद दिलाया कि उनके विनाश का क्या कारण था।

जैसा वे मिस्र देश में, जहाँ तुमने निवास किया था, करते हैं वैसा तुम मत करना। जैसा वे कनान देश में करते हैं, जहाँ मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ, वैसा तुम मत करना। तुम उनकी संविधियों पर मत चलना। 'ये कार्य करके अशुद्ध मत हो जाना; क्योंकि इन्हीं कार्यों द्वारा उन जातियों ने, जिन्हें मैं तुम्हारे सम्मुख से निकाल रहा हूँ, स्वयं को अशुद्ध किया था। उनकी भूमि भी अशुद्ध हो गई थी। अतः मैंने उस भूमि के अधर्म के कारण उसे दण्ड दिया, और उसने अपने निवासियों को निकाल दिया।' लेवीय व्यवस्था 18:3,24-25

परमेश्वर के पुत्र ने प्रकृति के तत्वों को (कॉल 1:17) अपने हाथ में रखा था जब तक कि यह धीरे-धीरे असंभव न हो गया, क्योंकि फिरऔन ने अपनी जडबुद्धि के कारण मिस्र को शैतान के हाथों सौंप दिया था। इस प्रक्रिया के माध्यम से मिस्र में कई लोग डर गए और पश्चात्ताप के लिए तैयार हो गए:

उसने (प्रभुने) दुष्ट स्वर्गदूतों को उनके बीच भेजकर (उन्हें अनुमति देकर) अपने क्रोध, रोष, कोप और क्लेश की उग्रता को उन पर डाल दिया। (भजन संहिता 78:49)

जैसा हम बाद में देखेंगे, ईश्वर के अहिंसक राज्य के सच्चे सिद्धांतों के प्रति इजरायल की अवज्ञा के कारण, यह स्तुति इजरायल की एक क्रोधिष्ट ईश्वर की धारणा को भी शामिल करती है, लेकिन यह वास्तविक विनाश की प्रक्रिया भी दिखाती है; दानवों को भूमि पर प्रवेश मिला क्योंकि मिस्रवासी दृढ़ और विद्रोही थे। इस प्रक्रिया के दौरान कई लोग मिस्र में डर गए और पछताने के लिए तैयार हो गए:

मिस्र के राजा और स्वर्ग के परमेश्वर के बीच का विवाद **सभी मिस्र को पता चल गया; क्योंकि ईश्वर के कार्यों ने इतना लंबा समय लिया कि कोई भी अनजान नहीं रहा। हर प्लेग के बाद ईश्वर ने देरी की, जिसमें पछताने** और आदेश “मेरे लोगों को जाने दो” का पालन करने के लिए बहुत अवसर दिया गया। **जबकि फिरो का दृढ़ मन लगभग असंवेदनशील होता जा रहा था, देश के बड़े लोग डर गए।** उन्हें पता था कि यह दृढ़ प्रतिरोध खत्म होना है, या फिर राष्ट्रीय विनाश ही उनका भविष्य है। **उनके सलाहकारों ने फिरो से ईश्वर की मांग को स्वीकार करके मिस्र को बचाने को कहा।** उनके क्रोध में उन्होंने पूछा, “यह आदमी हमारे लिए कितने दिन तक जाल बना रहेगा? उन लोगों को जाने दो, ताकि वे अपने ईश्वर की सेवा कर सकें: क्या तुम नहीं जानते कि मिस्र नष्ट हो गया है?” {YI अप्रैल 15, 1897, पैरा. 5}

हमें नहीं पता कि इन लोगों का क्या हुआ, लेकिन हम जानते हैं कि कुछ मिस्रवासी फिरो ने इजरायल का पीछा करने और उन्हें लौह सागर तक ले जाने का फैसला किया था, क्योंकि इस घटना के कुछ समय बाद मिस्र फिर से बढ़ा (1 राजाओं 11:21)। हालांकि फिरो अडिग रहा, और आखिरी दो प्लेग ने स्पष्ट रूप से दिखाया कि मिस्र ने अपने आपको मसीह को फिर से क्रूस पर चढ़ाया:

तो मूसा ने अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ाया, और मिस्र की पूरी भूमि में **तीन दिनों तक गहरा अंधकार हो गया**। वे एक-दूसरे को नहीं देख पा रहे थे, और कोई भी अपनी जगह से उठ नहीं पा रहा था, **लेकिन सभी इजरायली लोगों के घरों में प्रकाश था**। (यहोवा 10:21-23)

अब **छठे घंटे से नौवें घंटे तक** पूरी भूमि पर **अंधकार** छाया हुआ था। (मत्ती 27:45)

तो मूसा ने कहा, यह यहोवा कहता है: रात के आधे रात के समय मैं मिस्र के बीच से निकलूंगा, और **मिस्र की भूमि में प्रत्येक पहला बच्चा मरेगा...** मिस्र की पूरी भूमि में एक **बहुत बड़ी चीख** होगी, जैसा कभी नहीं हुआ और फिर कभी नहीं होगी। (यहोवा 11:4-6)

और नौवें घंटे यीशु ने एक बड़ी आवाज से **चिल्लाकर कहा**, एली, एली, लमा सबरब्थानी? यानी, **मेरे ईश्वर, मेरे ईश्वर, तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया?** (मत्ती 27:46)

ईश्वर का पहला बच्चा मिस्र के राष्ट्र में एक बड़ी चीख के साथ मरा, लेकिन वे इस तथ्य को अंधे हो गए और सोचने लगे कि यह यहोवा ने उनके बच्चों की मौत की है। वही पापी सोच जो क्रूस पर यीशु पर थी और उनके पिता के करुणामयी चेहरे को उनसे छिपा रही थी, वह मिस्रवासियों में थी जब वे सोचते थे कि यह यहोवा ही ने उनके बच्चों को मारा है।

ईश्वर अपने पुत्र को हमारे अपराधों के लिए दे देता है। वह स्वयं पाप बर्दाश्त करने वाले के प्रति न्यायाधीश का चरित्र अपनाता है, और अपने पिता के ममतामयी गुणों से खुद को रिहा करता है। {TM 245.2}

क्योंकि यहोवा मिस्र को सदमे से मारने के लिए आएगा [ऐसा लगता है कि यह सीधे उससे ही आ रहा है], और जब वे दरवाजे के शीर्ष और दोनों खंभों पर खून देखेंगे, तो यहोवा दरवाजे से गुजर

जाएगा और नाश करने वाले को आपके घरों में प्रवेश करने और आपको मारने नहीं देगा।
(यहोवा 12:23)

विश्वास से उन्होंने पासओवर मनाया और खून छिड़का, ताकि पहले जन्म का नाश करने वाला
[इसमें कहा नहीं है “जब ईश्वर ने उन्हें मारा”] उनसे न छू सके। (हिब्रू 11:28)

जब नाश करने वाला दूत मिस्र में आने वाला था, तब इजरायल को आदेश दिया गया कि वे अपने बच्चों और परिवारों को अपने घरों में इकट्ठा करें, और अपने दरवाजों के शीर्ष और दोनों ओर के खंभों को खून से छिड़कें, ताकि जब नाश करने वाला दूत भूमि से गुजरेगा, तो वे उन घरों को मसीह के अनुयायियों के निवास स्थान के रूप में पहचान ले, और अगर वे इस प्रक्रिया को पूरा नहीं करते, तो उनके और मिस्रवासियों के बीच कोई अंतर नहीं था। नाश करने वाला दूत जल्द ही फिर से निकलेगा, पहले जन्म को न मारने के लिए, बल्कि “पुराने और युवा, दोनों पुरुषों, महिलाओं और छोटे बच्चों को बिल्कुल मार डालने” के लिए जिनके पास चिह्न नहीं है। माता-पिता, अगर आप अपने बच्चों को बचाना चाहते हैं, तो उन्हें दुनिया से अलग करें, उन्हें बुरे बच्चों के संपर्क से दूर रखें; {RH अक्टूबर 14, 1875, पैरा. 10}

मिस्र में जेठाओं के मारे जाने से ठीक पहले, प्रभु ने इस्राएलियों को निर्देश दिया कि वे अपने बच्चों को अपने साथ अपने घरों में इकट्ठा करें, और लिंगेल और उनके दरवाजों की दो तरफ की चौकियों को खून से मारें, ताकि जब विनाशकारी स्वर्गदूत देश से गुजरे, तो वह उन घरों को पहचान सके जिन्हें इस प्रकार मसीह के अनुयायियों के निवास स्थानों के रूप में चिह्नित किया गया था, और उनके ऊपर से गुजरता था। अगर हम उन्हें दुष्ट की विनाशकारी शक्ति से बचाना चाहते हैं, तो आज हमें अपने बच्चों को अपने आसपास इकट्ठा करना होगा। मसीह और शैतान के बीच संघर्ष इस पृथ्वी के इतिहास के अंत तक तीव्रता में बढ़ेगा। हमें मसीह के रक्त में विश्वास रखना है, ताकि हम अपने सामने के खतरनाक समय से सुरक्षित रूप से गुजर सकें " 2सैट 199

यीशु खटखटाता है; क्या तुम उसे अपने दरवाजे से अंदर आने दोगे? क्या उसे हमारे पापों से साफ करने वाले खून की जगह दरवाजे के शीर्ष पर वह वाक्य लिखना पड़ेगा जो तुम्हें नाश करने वाले दूतों की शक्ति में छोड़ देता है? “वह अपनी मूर्तियों से जुड़ा हुआ है।” रक्षक दूत, “उसे अकेला छोड़ दो।” [होशेया 4:17.] “मैंने कितनी बार तुम्हारे बच्चों को इकट्ठा करना चाहा जैसे मुर्गी अपने

बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, और तुम नहीं माने।” [मत्ती 23:37.] जो दरवाजा खोलेगा, उसके लिए यीशु अंदर आकर अधिकार जमा लेगा। Lt 30a, 1892

शैतान ईश्वर और मनुष्य का बड़ा दुश्मन है। वह अपने एजेंटों के माध्यम से प्रकाश के दूतों के रूप में परिवर्तित हो जाता है। शास्त्र में उसे नाश करने वाला, भाइयों का आरोप लगाने वाला, धोखा देने वाला, झूठा बोलने वाला, पीड़ित करने वाला, और हत्यारा कहा गया है। {5T 137.4}

इस प्रकार, बुरे दूत मनुष्यता के सृष्टा और लाभदायक को अपने गुणों से ढक लेता है। क्रूरता शैतानी है। ईश्वर प्रेम है;... शैतान स्वयं ही वह दुश्मन है जो मनुष्य को पाप करने के लिए प्रलोभित करता है, और फिर उसे मार डालता है अगर वह कर सके; और जब वह अपने शिकार को अपने कब्जे में ले लेता है, तो वह उस विनाश में खुशी मनाता है। अगर उसे अनुमति मिले, तो वह पूरी जाति को अपने जाल में ले जाएगा। यदि ईश्वर की दिव्य शक्ति का बीच में आना न होता, तो आदम का एक भी बेटा या बेटी बच न पाता। {GC 534.2}

शैतान ने केवल मिस्र के पहले जन्म को ही नहीं मारा, बल्कि मिस्रवासियों के पापी अंधेरे और उनके यहोवा के सच्चे चरित्र को जानने से इनकार के कारण उन्हें और आज करोड़ों ईसाईयों को यकीन दिलाया कि ईश्वर ही नाश करने वाला है। कई लोग पूछते हैं कि फिर शास्त्र क्यों कहता है कि यहोवा ने मिस्र को नष्ट किया? ऐसे लोग नहीं समझते कि हमारा स्वर्गीय पिता हमारे पक्ष में अपनी प्रवेश कर सकता है और अपने सच्चे चरित्र को **केवल उस मात्रा में दिखा सकता है जिस मात्रा में हमने उसे स्वीकार किया है।** इसका मतलब है कि वह अपने को शुद्ध अगाप प्रेम के रूप में जानने के लिए लोगों को वशीभूत करने के लिए बाध्य नहीं है। इसीलिए, जैसा हमने नौवें प्लेग में देखा, मिस्रवासियों के लिए गहरा अंधकार था, जबकि इजरायल के लिए प्रकाश था।

शास्त्र के इस तथ्य को इसलिए दिखा सकता है कि यहोवा ने मिस्र के पहले जन्म को मारा क्योंकि यह मसीह की शक्ति थी जो शैतान के हाथों में उपयोग की जा रही थी। मसीह का विनाश के दौरान भींचा गया था और उसकी शक्ति को शैतान द्वारा नाश करने के लिए उपयोग किए जाने को देखना। रॉड तब एक साँप बन गया जब ईश्वर की सुरक्षा का हाथ हटा दिया गया। इसलिए जो लोग अंधेरे में रहते हैं, वे ईश्वर को पहले जन्म का नाश करने वाला मानने का फैसला कर सकते हैं, जैसा मिस्रवासियों ने किया, लेकिन उन लोगों के लिए जिनके घरों में प्रकाश है, यह जाना जाता है कि

ईश्वर बल का प्रयोग नहीं करता और कभी ऐसा नहीं करेगा । हमें ईश्वर के दूतों के संबंध में भी याद दिलाया जाता है:

दूत स्वर्गीय दरबारों से भेजे जाते हैं, न कि नाश करने के लिए, बल्कि खतरे में पड़े आत्माओं को देखभाल करने और रक्षा करने, खोए हुए को बचाने, और भटके हुए को फिर से झुंड में लाने के लिए । RH मई 10, 1906.

क्रूस के प्रकाश में

अब, अंधेरे और पहले जन्म की मौत के साथ, यह स्पष्ट रूप से दिखाया गया कि मसीह की शक्ति मिस्रवासियों के भीतर क्रूस पर चढ़ा दी गई थी क्योंकि उनके मनों ने नौ प्लेग के दौरान दिए गए आमंत्रण को अंततः अस्वीकार कर दिया था। लेकिन उन्होंने अपने पहले जन्म की मौत में ईश्वर के पहले जन्म के प्रकट होने को नहीं देखा, और इसलिए ईश्वर उनके मसीह को क्रूस पर चढ़ाने को उनके इजरायल का पीछा करने और उन्हें फिर से गुलामी में ले जाने के फैसले में प्रकट करने देगा। इस प्रकार इजरायल के रूप में वे दिखाएंगे कि मसीह का अनुसरण करने के बजाय, वे ईश्वर के पहले जन्म को अपना गुलाम बनाना चाहते हैं:

तब तुम फिरो से कहोगे, यह यहोवा कहता है, इजरायल मेरा पहला बेटा है, और मैं तुमसे कहता हूँ, तुम मेरे बेटे को जाने दो ताकि वे मुझसेवा कर सकें। अगर तुम उसे जाने नहीं दोगे, तो देखो, मैं तुम्हारे पहले बेटे को मार डालूंगा। (यहोवा 4:22-23)

यहोवा यहाँ फिरो के हिंसक देवताओं की भाषा में बोल रहा है, और अगर मिस्र ने आदेश का पालन किया होता, तो वे अपने स्वर्गीय पिता के सच्चे चरित्र को मसीह के क्रूस के माध्यम से देख पाते:

क्रूस की रहस्यमयता सभी अन्य रहस्यों की व्याख्या करती है। कलवरी से निकले प्रकाश में ईश्वर के गुण जो हमें डर और आदर से भर देते थे, सुंदर और आकर्षक दिखाई देते हैं। करुणा, नम्रता, और पितृत्व का प्रेम निष्कपटता, धर्म और शक्ति के साथ मिलकर दिखाई देता है। जब हम उसकी सिंहासन के महिमा को देखते हैं, उच्च और उठा हुआ, तो हम उसके चरित्र को उसकी कृपामयी प्रकटियों में देखते हैं, और कभी नहीं हुए जैसे समझते हैं, उस प्यार वाले शीर्षक, “हमारा पिता” के महत्व को। {GC 652.1}

मसीह की मिस्र में मौत मिस्र के पहले जन्म की मौत में प्रकट हुई, लेकिन मांसल मन के लिए यह ऐसा लगा जैसे ईश्वर ने पहले जन्म बच्चों को मारा। ईश्वर ने अपने मिस्री पहले जन्म बच्चों को नाश के लिए त्याग दिया, जैसा कि उन्होंने अपने पुत्र को क्रूस पर किया। फिर से, कलवरी पर मसीह की शारीरिक क्रूस पर, मानवता अपनी प्राकृतिक स्थिति में सोचती है कि पिता ने क्रूस की मांग की ताकि वे हमें माफ कर सकें। लेकिन यह गलत है। कृपया इन अंशों को ध्यान से पढ़ें:

मसीह के प्रेम ने हम पर अधिकार किया, क्योंकि हमने यह निष्कर्ष निकाला है: कि एक ने सबके लिए मरा, इसलिए सब मर गए; और वह सबके लिए मरा, ताकि जो जीवते हैं वे अब अपने लिए न जीवें बल्कि उसके लिए जिसने उनके लिए मरा और उठाया गया। अब, इसलिए, हम किसी को भी मांस के अनुसार नहीं देखते। हालांकि हमने कभी मसीह को मांस के अनुसार देखा, हम अब उसे ऐसे नहीं देखते। इसलिए, अगर कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है। पुराना गया देखिए, नया आ गया है। सब यह ईश्वर से है, जिसने मसीह के माध्यम से हमें अपने साथ मिलाया [प्रयोग] और हमें मिलाने का मंत्रालय दिया; यानी, मसीह में ईश्वर दुनिया को अपने साथ मिला रहा था, उनके अतिचारों को गिनते हुए नहीं, और हमें मिलाने का संदेश सौंप रहा था। (2 करिंथियों 5:14-19)

परमेश्वर के कानून के उल्लंघन ने मनुष्य को बचाने और फिर भी कानून की गरिमा और सम्मान बनाए रखने के लिए मसीह की मृत्यु को आवश्यक बना दिया... परमेश्वर अपने पुत्र को हमारे अपराधों के लिए सौंपने की अनुमति देता है। वह स्वयं पाप-वाहक के प्रति एक न्यायाधीश का चरित्र ग्रहण करता है, जो खुद को एक पिता के प्रिय गुणों से अलग करता है। इसमें उनका प्रेम विद्रोही जाति के लिए सबसे अद्भुत तरीके से खुद की प्रशंसा करता है। {FLB 104}

मसीह का प्रयोग इसलिए नहीं किया गया कि ईश्वर उन्हें प्रेम करने के लिए प्रेरित करे जिन्हें वह अन्यथा नहीं प्यार करता था; और यह इसलिए नहीं किया गया कि एक प्रेम को उत्पन्न किया जाए जो ईश्वर के हृदय में पहले से मौजूद नहीं था, बल्कि यह इसलिए किया गया क्योंकि यह ईश्वर के हृदय में पहले से मौजूद प्रेम का प्रकटीकरण था,... हमें यह विचार नहीं रखना चाहिए कि ईश्वर हमसे प्रेम करता है क्योंकि मसीह ने हमारे लिए मरा है, बल्कि यह कि उन्होंने इतना प्यार किया कि उन्होंने अपने एकमात्र पुत्र को हमारे लिए मरने के लिए दे दिया। —The Signs of the Times, मई 30, 1895. {7ABC 472.3}

लेकिन यह बड़ा त्याग इसलिए नहीं किया गया कि पिता के हृदय में मनुष्य के प्रति प्रेम उत्पन्न किया जाए, न कि उसे बचाने के लिए तैयार करने के लिए। नहीं, नहीं! {SC 13.2}

उल्लंघन के कारण मनुष्य ने उससे अलग कर लिया जो एकमात्र प्रकाश और प्रेम है। पापी व्यक्ति “ईश्वर के जीवन से विमुख” था, “पाप और पापों में मृत।” गिरे हुए जाति की एकमात्र आशा उनके ईश्वर के साथ मिलने में थी। शैतान ने इतना ईश्वर का गलत चित्रण किया था कि मनुष्य के पास ईश्वर के दिव्य चरित्र का कोई सही धारणा नहीं थी। लेकिन मोक्ष की योजना को लागू करते

हुए, मसीह ने दिखाया कि “ईश्वर प्रेम है।” “ईश्वर ने इस दुनिया को इतना प्यार किया कि उसने अपने एकमात्र पुत्र को दिया, ताकि जो उस पर विश्वास करे वह न नष्ट हो, बल्कि शाश्वत जीवन प्राप्त करे।” **पिता हमसे प्रेम करता है, क्योंकि बड़े प्रयोग के; बल्कि उन्होंने प्रयोग इसलिए दिया क्योंकि वे हमसे प्यार करते थे।** मसीह वह माध्यम था जिसके माध्यम से वह अपने अनंत प्रेम को गिरे हुए दुनिया पर ढाल सकता था। “ईश्वर मसीह में था, दुनिया को अपने साथ मिला रहा था।” पिता को बेटे के साथ दुख हुआ। गेथसेमनी की यातना, कलवरी की मृत्यु, अनंत प्रेम के हृदय ने हमारे उद्धार का मूल्य चुकाया। {BEcho अगस्त 1, 1892, पैरा. 2}

जिसने मिस्र के पहले जन्म की हत्या की वह शैतान, नाश करने वाला था, लेकिन इस घटना के बाद उसने अपना छुपाना बरकरार रखा। शैतान वही था जिसने क्रूस पर हमारे पाप के माध्यम से मसीह की हत्या की। इस बार स्वर्ग के दूतों ने उसके छुपाने को पूरी तरह से देखा और मनुष्य को सच्चाई को जानने के लिए एक दरवाजा खुला।

शैतान ने देखा कि उसका छुपाना उजागर हो गया था। उसका प्रशासन अप्रभावित दूतों और स्वर्गीय ब्रह्मांड के सामने खुल गया था। उसने खुद को हत्यारे के रूप में प्रकट किया। ईश्वर के पुत्र के खून का बहाना करके, उसने स्वर्गीय जीवों के सहानुभूति से अपना मूल तोड़ दिया था। इसके बाद उसका काम सीमित हो गया। जैसा भी चरित्र अपनाए, वह दूतों को उनके स्वर्गीय दरबारों से आने पर उनके आगे नहीं रोक सकता था, और उनसे मसीह के भाइयों को काले कपड़े और पाप की अशुद्धता से लिपटे हुए आरोप लगा सकता था। शैतान और स्वर्गीय दुनिया के बीच आखिरी लिंक समाप्त हो गया था। {DA 761.2}

जब तक यह समझ नहीं आता कि ईश्वर ने अपने मिस्री बच्चों से प्यार किया और उनकी मौत में उसका हृदय भींचा, तब तक यह असंभव है कि मसीह मिस्र में क्रूस पर चढ़ाया गया और ईश्वर ने मिस्र को इजरायल की कीमत पर दिया। इसके अलावा, अगर हम मसीह के क्रूस को मिस्रवासियों की मौत में प्रकट नहीं देख पाते, तो हमें पुराने नियम को उसी वेल के साथ पढ़ना पड़ता है जिसे इजरायलियों ने मूसा को अपने चेहरे पर पहनने के लिए कहा।

देखो कि चूँकि हमारे पास ऐसी आशा है, हम बहुत सरल भाषा का प्रयोग करते हैं: (13) और मूसा के रूप में नहीं, जिसने अपने चेहरे पर एक वेल डाला, ताकि इजरायल के बच्चे उस चीज के अंत को स्थिर न देख सकें जो समाप्त हो गई है: (14) लेकिन उनका मन अंधा हो गया: क्योंकि आज

तक उसी वेल का अपसार नहीं हुआ पुराने नियम को पढ़ते समय; जो वेल मसीह में दूर हो गया है। (2 करिंथियों 3:12-14)

जहाँ भी हम ईश्वर के न्याय को देखते हैं, हमें मसीह के क्रूस को देखना चाहिए, अन्यथा इन न्याय के कार्य बिना किसी करुणा के पूरी तरह से रहित हैं; यह ईश्वर के नियम को देखना है बिना करुणास्थल के। इस तरह के ईश्वर के दृष्टिकोण वाला पाठक को एक ईश्वर का दृष्टिकोण देगा जो कभी-कभी बिना करुणा के काम करता है, और ऐसे विश्वास उन लोगों को ईश्वर के चिह्न से रोकता है जो उसके चरित्र का सच्चा प्रकटीकरण है।

निर्गमन और फसह का समय

हमारे पिता के अहिंसक चरित्र का अतिरिक्त प्रमाण फसह के समय की जांच में पाया जाता है। यदि यह दिखाया जा सकता है कि मसीह के समय सच्चा फसह शुक्रवार को नहीं बल्कि गुरुवार को था, तो फसह की घटना शुक्रवार को अपने पुत्र को मारने की योजना बनाने के बजाय अपने पुत्र को त्यागने की घटना है। यह एंटी-टाइप के माध्यम से दिखाएगा कि परमेश्वर ने मिस्रियों को मारने के बजाय विध्वंसक को सौंप दिया था।

निर्गमन का समय 430 साल पहले अब्राहम को दिए गए वादे की पूर्ति थी, लेकिन 30 साल बाद पुष्टि हुई जब उन्होंने प्रभु के साथ एक औपचारिक वाचा की:

मेरे कहने का अभिप्राय यह है: जो विधान परमेश्वर द्वारा प्रामाणिक किया जा चुका है, **उसे चारसौ तीस वर्ष बाद** होने वाली **व्यवस्था न तो रद्द** कर सकती है और न उसकी **प्रतिज्ञा** को व्यर्थ बना सकती है। गलातियों 3:17

प्रभु ने अब्राम से कहा, 'निश्चित जान ले कि तेरे वंशज पराए देश में प्रवास करेंगे। वे वहाँ गुलाम बनकर रहेंगे। **चार सौ वर्ष तक उन पर अत्याचार होता रहेगा**। किन्तु जो देश उन्हें गुलाम बनाएगा, उसे मैं दण्ड दूँगा। इसके पश्चात् वे अपार सम्पत्ति के साथ वहाँ से निकल आएँगे। उत्पत्ति 15:13-14

चारसौ तीस वर्ष के ठीक अन्तिम दिन प्रभु के लोग दल-बल सहित मिस्र देश से निकल गए। निर्गमन 12:41

उस दिन सदियों पहले भविष्यसूचक दर्शन में इब्राहीम पर प्रकट इतिहास पूरा हुआ: "तेरा वंश उस देश में परदेशी होगा जो उनका नहीं है, और उनकी सेवा करेगा; और वे चार सौ वर्ष तक उन्हें पीड़ित करेंगे; और उस जाति का भी, जिसकी वे सेवा करेंगे, मैं न्याय करूँगा: और उसके बाद वे बड़ी संपत्ति के साथ बाहर आएँगे। उत्पत्ति 15:13,14. **चार सौ साल पूरे हो चुके थे।**" और ऐसा ही दिन आया कि यहोवा इस्राएलियों को उनकी सेनाओं के द्वारा मिस्र देश से बाहर ले आया। {PP 281.4}

लेकिन अपने निर्धारित मार्ग के विशाल सर्किट में सितारों की तरह, परमेश्वर के उद्देश्यों कोई जल्दबाजी और कोई देरी पता है। **महान अंधकार और धुँ की भट्टी के प्रतीकों के माध्यम से, परमेश्वर ने इब्राहीम को मिस्र में इस्राएल के बंधन के बारे में बताया था, और घोषणा की थी कि उनके प्रवास का समय चार सौ वर्ष होना चाहिए। "उसने कहा," इसके बाद वे बड़े पदार्थ के साथ बाहर निकलेंगे। उत्पत्ति 15:14 उस शब्द के खिलाफ, फिरौन के गौरवशाली साम्राज्य की सारी शक्ति व्यर्थ में लड़ी। ईश्वरीय प्रतिज्ञा में नियत "उसी दिन" पर, "ऐसा हुआ कि प्रभु की सारी सेनाएँ मिस्र देश से निकल गई।" निर्गमन 12:41 इस प्रकार स्वर्ग की सभा में मसीह के आने का समय निर्धारित किया गया था। जब समय की महान घड़ी ने उस घंटे की ओर इशारा किया, तो यीशु का जन्म बेतलेहेम में हुआ था। {DA 32.1}**

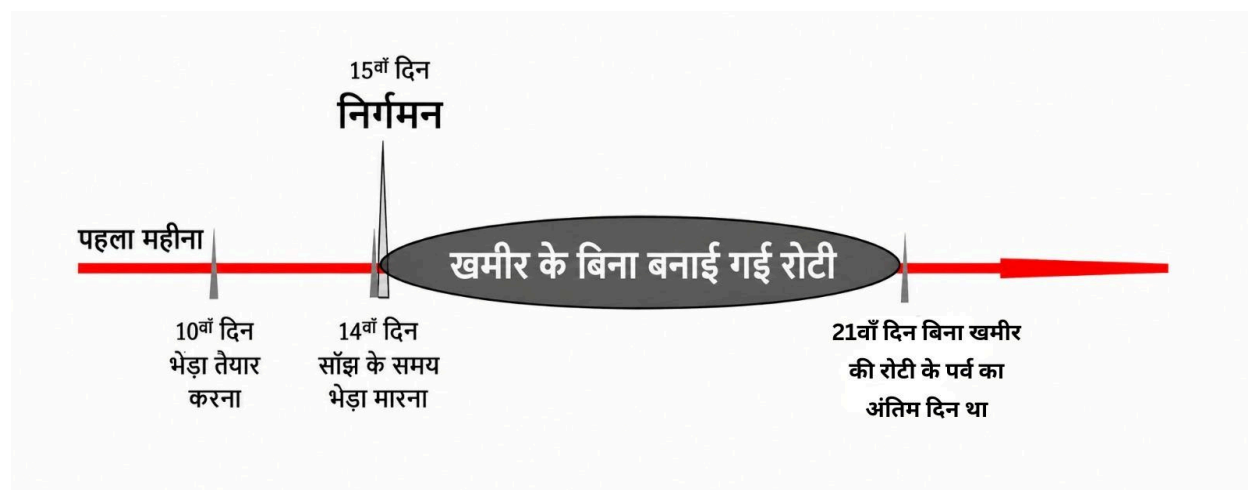
भविष्यवाणी की आत्मा मिस्र में फसह को अब्राहम के साथ की गई वाचा से जोड़ती है क्योंकि यह उसी दिन था। यह भी निर्गमन 12:41,51 में व्यक्त किया गया है। एलेन व्हाइट तब इन घटनाओं को पिता और पुत्र के बीच स्वर्ग में परिषद से जोड़ती है जब उनके बीच अनन्त वाचा बनाई गई थी।

स्वर्ग में इस परिषद में पिता और पुत्र ने मोक्ष की योजना के विभिन्न चरणों के लिए समय निर्धारित या पूर्वावलोकन किया। चूँकि निर्गमन उसी दिन था जब अब्राहम के साथ वाचा की गई थी, तो यह दिन फसह था। प्रभु अब्राहम के साथ वाचा बनाने के लिए वर्ष के ठीक उसी दिन को क्यों चुनेंगे, यदि नहीं, क्योंकि यह वही समय था जब पिता और पुत्र ने मानवता को बचाने के लिए वह अनन्त वाचा बनाई थी, यदि वे शैतान की छल से भ्रमित हो गए थे।

मानव जाति का उद्धार हमेशा स्वर्ग की परिषदों का उद्देश्य रहा है। दया की वाचा दुनिया की नींव से पहले बनाई गई थी। यह अनंत काल से अस्तित्व में है, और इसे अनन्त वाचा कहा जाता है। निश्चित रूप से जैसा कि ऐसा कोई समय नहीं था जब परमेश्वर नहीं थे, वैसे ही निश्चित रूप से ऐसा कोई क्षण नहीं था जब मानवता के लिए अपनी कृपा प्रकट करना शाश्वत मन का आनंद न हो। {AG 130.2}

तो आइए हम परमेश्वर द्वारा मूसा को दिए गए निर्देशों की बारीकी से जाँच करें ताकि हम निर्गमन और फसह का सही समय पा सकें:

प्रभु ने मूसा और हारून से मिस्र देश में कहा, **‘यह महीना तुम्हारे लिए सब महीनों में प्रथम माना जाएगा। तुम इस महीने को वर्ष के महीनों में प्रथम मानना। तुम समस्त इस्राएली मंडली से यह कहो कि इस महीने के दसवें दिन प्रत्येक व्यक्ति, अपने पूर्वजों के परिवार के अनुसार, घर पीछे एक-एक मेमना लेगा। यदि कोई परिवार मेमने का मांस खाने के लिए छोटा हो, तो वह और उसका निकटतम पड़ोसी अपने-अपने परिवार की सदस्य-संख्या के अनुसार मेमना लेगा। तुम प्रत्येक व्यक्ति के खाने के सामर्थ्य के अनुसार मेमने के मांस का हिसाब करना। तुम्हारा मेमना निष्कलंक, नर और एक वर्ष का होना चाहिए। तुम उसे भेड़ों अथवा बकरियों के झुण्ड से लेना। तुम उसे इस महीने के चौदहवें दिन तक जीवित रखना। उस दिन गोधूली के समय इस्राएली मंडली की समस्त धर्मसभा अपने-अपने मेमने का वध करेगी।...** ‘यह दिन तुम्हारे लिए एक स्मारक दिवस होगा। तुम इसे प्रभु के लिए यात्रा-पर्व के रूप में मनाना। तुम इसे पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थायी संविधि मानना। तुम सात दिन तक बेखमीर रोटी खाना। तुम पहले ही दिन अपने-अपने घरों से खमीर दूर करना; क्योंकि जो व्यक्ति पहले दिन से सातवें दिन तक, इस अवधि में खमीरी वस्तु खाएगा, वह इस्राएली समाज में से नष्ट किया जाएगा। **तुम पहले दिन और सातवें दिन पवित्र सभा बुलाना।** इन दोनों दिनों में कोई भी काम न किया जाए; प्रत्येक मनुष्य के लिए जो भोजन चाहिए, केवल उसको तुम पका सकते हो। **तुम बेखमीर रोटी के पर्व का पालन करना। इस दिन मैं तुमको दल-बल सहित मिस्र देश से बाहर निकाल लाया हूँ। इसलिए तुम पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थायी संविधि के रूप में इस दिन का पालन करना। तुम प्रथम महीने के चौदहवें दिन की सन्ध्या से इक्कीसवें दिन की सन्ध्या तक बेखमीर रोटी खाना।** निर्गमन 12:1-6, 14-18



आइए हम इसकी तुलना कलवारी पर यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के आसपास की घटनाओं से करें:

फसह के छः दिन पहले, यीशु बैतअन्य में आया, जहाँ लाज़र था, जिसे यीशु ने मरे हुएों में से जिलाया था। **दूसरे दिन** दावत में आई बड़ी भीड़ ने सुना कि यीशु यरूशलेम आ रहा है। इसलिए उन्होंने ताड़ के पेड़ों की शाखाएँ लीं और उससे मिलने के लिए बाहर निकले, रोते हुए, होसन्ना! धन्य है वह जो यहोवा के नाम से आता है, अर्थात् इस्राएल का राजा! (यूहन्ना 12:1,12-13)

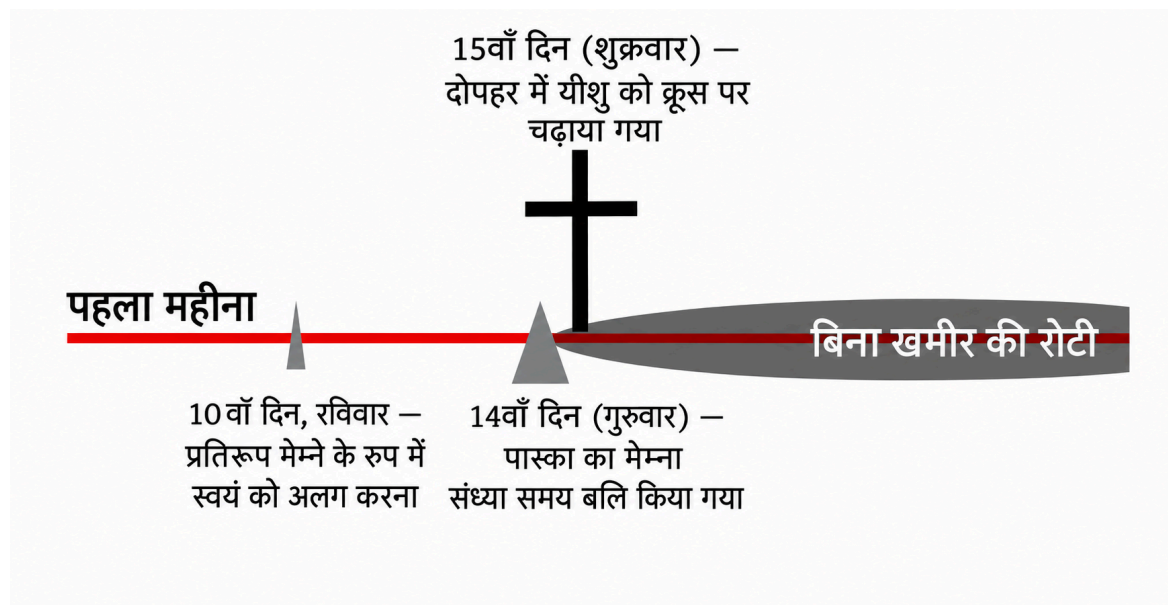
यह सप्ताह के पहले दिन था जब मसीह ने यरूशलेम में अपना विजयी प्रवेश किया... भीड़ ने उन्हें अपने राजा मसीहा के रूप में सम्मानित किया। यीशु ने अब उस सम्मान को स्वीकार कर लिया जिसकी उन्होंने पहले कभी अनुमति नहीं दी थी, और शिष्यों ने इसे इस बात के प्रमाण के रूप में प्राप्त किया कि उन्हें सिंहासन पर स्थापित देखकर उनकी खुश आशाओं को पूरा किया जाना था।

यह सप्ताह के पहले दिन था जब मसीह ने यरूशलेम में अपना विजयी प्रवेश किया... भीड़ ने उन्हें अपने राजा मसीहा के रूप में सम्मानित किया। यीशु ने अब उस सम्मान को स्वीकार कर लिया जिसकी उन्होंने पहले कभी अनुमति नहीं दी थी, और शिष्यों ने इसे इस बात के प्रमाण के रूप में प्राप्त किया कि उन्हें सिंहासन पर स्थापित देखकर उनकी खुश आशाओं को पूरा किया जाना था। भीड़ आश्चर्य थी कि उनकी मुक्ति का समय निकट है। कल्पना में उन्होंने रोमन सेनाओं को यरूशलेम से खदेड़ते हुए देखा, और इज़राइल ने एक बार फिर एक स्वतंत्र राष्ट्र... यीशु ने अपने पार्थिव जीवन में पहले कभी इस तरह के प्रदर्शन की अनुमति नहीं दी थी। उन्होंने स्पष्ट रूप से परिणाम की भविष्यवाणी की। यह उसे क्रूस पर ले जाएगा। लेकिन इस प्रकार उनका उद्देश्य सार्वजनिक रूप से खुद को उद्धारक के रूप में प्रस्तुत करना था। वह उस बलिदान की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहते थे जो एक पतित दुनिया के लिए उनके मिशन का ताज पहनना था। जब लोग फसह मनाने के लिए यरूशलेम में इकट्ठा हो रहे थे, तो उन्होंने, प्रतिरूप मेम्ना, एक स्वैच्छिक कार्य द्वारा खुद को एक बलि के रूप में अलग कर लिया। {डीए 571.2}

और अखमीरी रोटी के पहले दिन, जब वे फसह भेड़ का बच्चा बलि, उसके चेलों ने उससे कहा, "आप हमें कहाँ ले जाएगा और आप फसह खाने के लिए तैयार करने के लिए?" (मरकुस 14:12)

अब अखमीरी रोटी का पर्व निकट आ गया, जिसे फसह कहा जाता है। और महायाजकों और शास्त्रियों ने उसे मारने की कोशिश की, क्योंकि वे लोगों से डरते थे। फिर अखमीरी रोटी का दिन आया, जिस पर फसह के भेड़ के बच्चे का बलिदान किया जाना था। "तब यीशु ने पतरस और

यूहन्ना को यह कहते हुए भेजा, "जाओ और हमारे लिए फसह तैयार करो, ताकि हम उसे खा सकें।" (लूका 22:1-2,7-8)



तीन सिनोप्टिक सुसमाचारों (मत्ती, मरकुस और लूका) की गवाही से पता चलता है कि फसह की सही तारीख पहले महीने का 14वां दिन था, जो उस वर्ष गुरुवार को पड़ता था, न कि शुक्रवार को। इसकी पुष्टि इस तथ्य से भी होती है कि सप्ताह के पहले दिन रविवार को उनके विजयी प्रवेश के दौरान लोगों ने मसीह को गले लगाया था। यह इसे महीने का 10वां दिन बनाता है। प्रकार में, भेड़ के बच्चे को 10वें दिन चुना गया और 14वें दिन तक रखा गया।

तुम समस्त इस्राएली मंडली से यह कहो कि **इस महीने के दसवें दिन प्रत्येक व्यक्ति**, अपने पूर्वजों के परिवार के अनुसार, घर पीछे **एक-एक मेमना लेगा**। निर्गमन 12:3

जैसा कि कई ईसाइयों द्वारा दावा किया जाता है कि रविवार को लोगों द्वारा मसीह का स्वागत किया गया था, 14वां दिन गुरुवार होता है न कि शुक्रवार।

यीशु ने उस रात अपने चेलों के साथ फसह का भोजन किया था जो उसी समय था जब इस्राएल के लिए इस प्रकार के पलायन का समय था।

पहले यहूदी महीने के चौदहवें दिन, जिस दिन और महीने में पंद्रह लंबी शताब्दियों तक फसह का भेड़ का बच्चा मारा गया था, मसीह ने अपने शिष्यों के साथ फसह खाया, [मसीह ने गुरुवार को फसह खाया, एलेन व्हाइट इसे अवीव की 14 तारीख कहते प्रतीत होते हैं] उस दावत की स्थापना की जो उनकी अपनी मृत्यु को "परमेश्वर का मेम्रा, जो दुनिया के पाप को दूर करता है" के रूप में याद करने के लिए थी। {GC 399.3}

इससे हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पिता ने शुक्रवार के लिए अपने पुत्र की मृत्यु का निर्धारण नहीं किया था, बल्कि उन्होंने उसे केवल गुरुवार को हमें सौंप दिया था ताकि वह दुनिया के पाप को अपने ऊपर ले सकें। उस रात, जो 15वें दिन की बाइबिल की शुरुआत थी, जब उसकी आत्मा पर भारी बोझ पड़ा, तो वह वास्तव में गेथसेमाने में मर गया होता, अगर पिता ने उसे मजबूत करने के लिए एक दूत नहीं भेजा होता।

और उन से बोले, **“मैं अत्यन्त व्याकुल हूँ मानो मेरे प्राण निकल रहे हों! तुम यहाँ ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।”** मत्ती 26:38

तब वह ढेला फेंकने की दूरी तक उन से अलग हो गये और घुटने टेक कर उन्होंने यह कहते हुए प्रार्थना की, **“पिता! यदि तू चाहे, तो यह प्याला मुझ से हटा ले। फिर भी मेरी नहीं, किन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।”** [तब येशु को स्वर्ग का एक दूत दिखाई पड़ा, जिसने उन को बल प्रदान किया। येशु प्राणपीड़ा में पड़ने के कारण और भी एकाग्र हो कर प्रार्थना करते रहे और उनका पसीना रक्त की बूंदों की तरह धरती पर टपकता रहा।] लूकस 22:41-44

अपने शिष्यों के साथ, उद्धारकर्ता धीरे-धीरे गेथसेमाने के बगीचे की ओर बढ़े। **फसह का चाँद, चौड़ा और भरा हुआ, बादल रहित आकाश से चमक रहा था...** यीशु अपने चेलों से दिल से बात कर रहा था और उन्हें निर्देश दे रहा था; लेकिन जैसे ही वह गेथसेमानी के पास पहुँचा, वह अजीब तरह से चुप हो गया। वह अक्सर ध्यान और प्रार्थना के लिए इस स्थान पर आते थे; लेकिन कभी भी अपने अंतिम पीड़ा की इस रात के रूप में इतने दुख से भरे दिल के साथ नहीं। पृथ्वी पर अपने पूरे जीवन में वे ईश्वर की उपस्थिति के प्रकाश में चले थे। जब शैतान की आत्मा से प्रेरित लोगों के साथ संघर्ष होता था, तो वह कह सकता था, **"जिसने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है: पिता ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा है; क्योंकि मैं हमेशा वही करता हूँ जो उसे प्रसन्न करता है।"** यूहन्ना 8:29 **लेकिन अब ऐसा लग रहा था कि वह परमेश्वर की स्थायी उपस्थिति के प्रकाश से दूर हो गए हैं।**

अब वह अपराधियों के साथ गिना गया था। पतित मानवता का अपराध उसे सहन करना पड़ता है। जो पाप को नहीं जानता था, उस पर हम सभी का अधर्म लाद दिया जाना चाहिए। पाप उसके सामने इतना भयानक दिखाई देता है, अपराध का भार इतना अधिक है कि उसे सहन करना पड़ता है, कि वह इस डर से लुभाता है कि यह उसे अपने पिता के प्रेम से हमेशा के लिए बाहर कर देगा। {डीए 685}

संसार के पाप उस पर थे। वह अपने पिता के कानून के उल्लंघनकर्ता के रूप में मनुष्य के स्थान पर पीड़ित था। यह प्रलोभन का दृश्य था। परमेश्वर का दिव्य प्रकाश उनकी दृष्टि से दूर हो रहा था, और वे अंधेरे की शक्तियों के हाथों में जा रहे थे। {2T 203.2}

गुरुवार (अबिब 14वाँ)		शुक्रवार (अबिब 15वाँ)		सब्त (अबिब 16वाँ)		रविवार (अबिब 17वाँ)	
रात	दिन	रात	दिन	रात	दिन	रात	दिन
	15:00 बजे फसह का वध		बिना खमीर की रोटी — पहला दिन		बिना खमीर की रोटी — दूसरा दिन		बिना खमीर की रोटी — तीसरा दिन

*बाइबल में एक दिन रात से शुरू होता है (उत्पत्ति 1:8; 23:32; लूका 23:54; मरकुस 1:21, 32)।

“क्योंकि जैसे योना तीन दिन और तीन रात बड़ी मछली के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के हृदय में रहेगा।”
मत्ती 12:40

पिता ने अपने पुत्र को मजबूत किया क्योंकि, अगर वह गेथसेमानी में मर गया, तो कोई भी यह नहीं देखेगा कि हमारे पापों ने परमेश्वर के पुत्र के साथ क्या किया। अगले दिन, जो शुक्रवार था, हमने वास्तव में दिखाया कि हमारी पतित प्रकृति उनके साथ क्या करती है। यीशु ने सब्त के दौरान कब्र में आराम किया और रविवार की सुबह, भोर होने से पहले, उन्हें उनके पिता ने उठाया था:

सप्ताह के प्रथम दिन, **पौ फटते ही स्त्रियाँ** तैयार किये हुए सुगन्धित द्रव्य ले कर कबर के पास गयीं। उन्होंने पत्थर को कबर से अलग लुढ़काया हुआ पाया, किन्तु शवकक्ष के भीतर जाने पर उन्हें प्रभु येशु का शव नहीं मिला। लूकस 24:1-3

सप्ताह के पहले दिन की रात धीरे-धीरे दूर हो गई थी। सबसे अंधेरा समय, सुबह होने से ठीक पहले आ गया था... "और देखो, एक बड़ा भूकम्प आया, क्योंकि यहोवा का एक दूत स्वर्ग से

उतरा। परमेश्वर की समग्रता के साथ पहने हुए, इस स्वर्गदूत ने स्वर्गीय दरबारों को छोड़ दिया...
सैनिक उसे पत्थर हटाते हुए देखते हैं जब वह एक कंकड़ होता है, और उसे चिल्लाते हुए सुनते हैं,
"ईश्वर के पुत्र, बाहर आओ;" तुम्हारे पिता तुम्हें बुलाते हैं। {डीए 779}

इसलिए गुरुवार की दोपहर से गिनती शुरू करते हुए, हमारे पास तीन दिन और तीन रातें हैं, जैसा कि उद्धारकर्ता ने भविष्यवाणी की थी। इससे पता चलता है कि अबीब 14 वीं के अंत में और अबीब 15 वीं की शुरुआत में सच्चे फसह के बाद की घटनाएं केवल इस बात की शारीरिक अभिव्यक्ति हैं कि हमारे पाप मसीह के लिए क्या करते हैं, न कि पिता ने शुक्रवार दोपहर को क्रूस पर अपने बेटे को मारा।

यह समझने के लिए महत्वपूर्ण है कि मिस्र में फसह की रात को क्या हुआ था। परमेश्वर ने अपने मिस्र के जेठे बेटों को त्याग दिया, उन्होंने उन्हें मारा नहीं। प्रकार और विरोधी प्रकार समान होना चाहिए।

न्याय के संबंध में मानव सोच यहूदियों के फसह के समय में परिलक्षित हुई जैसा कि जॉन द्वारा व्यक्त किया गया था, क्योंकि उन्होंने गणना का एक अलग तरीका अपनाया था और मूल फसह के एक दिन बाद उनका फसह हुआ था। ध्यान दें कि उनके समय पर क्या हुआ:

महापुरोहित और सिपाही उन्हें देखते ही चिल्ला उठे, "इसे क्रूस पर चढ़ाओ! इसे क्रूस पर चढ़ाओ!" पिलातुस ने उन से कहा, "इसे तुम्हीं ले जाओ और क्रूस पर चढ़ाओ। मैं तो इस में कोई दोष नहीं पाता।" यहूदी धर्मगुरुओं ने उत्तर दिया, **"हमारी एक व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार यह प्राणदण्ड के योग्य है, क्योंकि यह स्वयं को परमेश्वर का पुत्र मानता है।"** योहन 19:6-7

3. समय के बारे में अधिक जानकारी के लिए, "सब्त का आरंभ कब होना चाहिए" नामक पुस्तक maranathamedia.com पर देखें।

यह सुन कर पिलातुस ने येशु को बाहर ले आने का आदेश दिया। वह उस स्थान पर, जो “चबूतरा” और इब्रानी में “गब्बथा” कहलाता है, **न्यायासन पर बैठ गया।** पास्का (फसह) पर्व की तैयारी का दिन था। **लगभग दोपहर का समय था।** पिलातुस ने यहूदी धर्मगुरुओं से कहा, “यही है तुम्हारा राजा!” इस पर वे चिल्ला उठे, “इसे ले जाओ! इसे ले जाओ! इसे क्रूस पर चढ़ाओ!” पिलातुस ने उन से कहा, “क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ा दूँ?” महापुरोहितों ने उत्तर दिया, “रोमन सम्राट के अतिरिक्त हमारा कोई राजा नहीं है।” **तब पिलातुस ने येशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए उनके हवाले कर दिया।** योहन 19:13-16

चूँकि यूहन्ना की पूरी पुस्तक यहूदियों के पर्वों के बारे में बात करती है (यूहन्ना 5:1; 6:4; 7:2) और फसह का समय केवल इस सुसमाचार के अभिलेख में भिन्न है, हम देखते हैं कि यह मानव निर्मित निर्णय के साथ एक मानव निर्मित दिन पर था कि यीशु को मौत की सजा दी गई थी और इसका पिता के फसह के सिद्धांतों से कोई लेना-देना नहीं है। हम ध्यान देते हैं कि इस प्रकार के भीतर कि भेड़ का बच्चा 14 तारीख की दोपहर को चढ़ाया गया था, लेकिन मिस्र के जेठे को महीने के 15वें दिन की रात के दौरान मार दिया गया था। इसलिए एक बार फिर टाइप और एंटी-टाइप एक ही दिन काम कर रहे हैं।

फिरौन अपने हृदय की कठोरता को प्रकट करता है

मसीह को मारने के बाद फरीसियों ने उसे हमेशा के लिए कब्र में गुलाम बनाना चाहा। इसी तरह मिस्र के साथ-साथ फिरौन ने मूसा और हारून की अपीलों के माध्यम से मसीह को अस्वीकार करने के बाद और यह अस्वीकृति उनके पहले जन्म की मृत्यु में प्रकट हुई थी, वे उन्हें दास के रूप में पुनः प्राप्त करके इस्राएल के रूप में मसीह को गुलाम बनाना चाहते थे। दोनों कहानियों के बीच की समानता हमें प्रस्तुत करती है कि लाल सागर का अनुभव फिरौन द्वारा मसीह को दफनाने का प्रयास था।

जब मिस्र देश के राजा को बताया गया कि इस्राएली भाग गए, **तब उनके प्रति फरओ और उसके कर्मचारियों का मन बदल गया।** वे कहने लगे, 'यह हमने क्या किया कि इस्राएलियों को दासत्व से मुक्त कर जाने दिया?' अतएव फरओ ने अपना रथ जुतवाया और अपने साथ सैनिकों को लिया। उसने छः सौ चुने हुए रथ, तथा मिस्र देश के सब दूसरे रथ भी लिये, जिन पर उच्चाधिकारी सवार थे। **प्रभु ने मिस्र देश के राजा फरओ का हृदय हठीला बना दिया।** अतः उसने इस्राएलियों का पीछा किया जो साहस के साथ बढ़ते जा रहे थे। समस्त मिस्र-निवासियों ने, फरओ के सब घोड़ों, रथों, घुड़सवारों और उसकी सम्पूर्ण सेना ने उनका पीछा किया, और बअलसफोन के सम्मुख पीहाहीरोत के पास, **जहाँ इस्राएली समुद्र तट पर पड़ाव डाले हुए थे, जा पहुँचे।** निर्गमन 14:5-9

इस प्रकार यहोवा ने फिरौन के मन को कठोर कर दिया। परमेश्वर ने मूसा के मुँह से मिस्र के राजा से बात की, जिससे उसे दिव्य शक्ति का सबसे उल्लेखनीय प्रमाण मिला; लेकिन सम्राट ने उस प्रकाश को जिद्दी से अस्वीकार कर दिया जो उसे पश्चात्ताप में ले आया होगा। परमेश्वर ने विद्रोही राजा के दिल को कठोर करने के लिए एक अलौकिक शक्ति नहीं भेजी, लेकिन जैसे ही फिरौन ने सत्य का विरोध किया, पवित्र आत्मा को वापस ले लिया गया, और वह उस अंधेरे और अविश्वास के लिए छोड़ दिया गया जिसे उसने चुना था। आत्मा के प्रभाव को लगातार अस्वीकार करने से, मनुष्य खुद को परमेश्वर से अलग कर लेते हैं। उनके दिमाग को प्रबुद्ध करने के लिए उनके पास और अधिक शक्तिशाली एजेंसी नहीं है। उनकी इच्छा का कोई भी रहस्योद्घाटन उनके अविश्वास में उन तक नहीं पहुँच सकता है। - द रिव्यू एंड हेराल्ड, 20 जून 1882. (S.D.A. बाइबल टिप्पणी 3:1151) {IMCP 35.4.}

फिरौन ने सभी मानव जाति के पिता के वास्तविक चरित्र से निकलने वाले प्रकाश को प्राप्त करने से इनकार कर दिया। पश्चाताप के आह्वान का विरोध करते हुए, फिरौन ने पुनरुत्थान की किसी भी आशा के बिना मसीह को अपने व्यक्तिगत अनुभव में स्थायी रूप से क्रूस पर चढ़ाने का निश्चय किया। अब वह अंततः अपने राष्ट्र के लिए लड़ने वाले एक हिंसक देवता के अपने भ्रम में छोड़ दिया गया था।

इस्राएल अभी भी मिस्र के देवताओं के अधीन है

दुर्भाग्य से, इस युद्ध के देवता-चित्र के कुछ हिस्से इस्राएलियों के दिमाग में और यहां तक कि खुद मूसा के दिमाग में भी थे।

जब फरओ निकट आया, इस्राएलियों ने अपनी आंखें उठाकर देखा कि सारा मिस्र देश उनका पीछा कर रहा है। वे बहुत डर गए। उन्होंने चिल्लाकर प्रभु की दुहाई दी। इस्राएलियों ने मूसा से कहा, 'क्या मिस्र देश में कबरों का अभाव था जो आप हमें निर्जन प्रदेश में मरने के लिए ले आए? आपने हमें मिस्र देश से निकालकर हमारे साथ यह क्या किया? क्या हमने आपसे मिस्र देश में यह नहीं कहा था, "हमारे पास से चले जाइए; हमें मिस्र-निवासियों की गुलामी करने दीजिए?" हमारे लिए यह अच्छा होता कि हम निर्जन प्रदेश में मरने की अपेक्षा मिस्र-निवासियों की गुलामी करते।' मूसा ने इस्राएलियों से कहा, 'मत डरो! निश्चिन्त खड़े रहो, और प्रभु का उद्धार-कार्य देखो, जिसे वह आज तुम्हारे लिए करेगा। जिन मिस्र-निवासियों को आज तुम देख रहे हो, उन्हें फिर कभी नहीं देखोगे। प्रभु तुम्हारे लिए युद्ध करेगा। तुम केवल शान्त रहो।' निर्गमन 14:10-14

इस्राएल ने शिकायत की क्योंकि वे परमेश्वर के वास्तविक चरित्र को नहीं जानते थे और पिता और उसके पुत्र पर भरोसा नहीं कर सकते थे। अन्य राष्ट्रों की तरह उन तक केवल भय के माध्यम से पहुँचा जा सकता था:

मसीह के पहले आगमन के समय तक, लोग क्रूर, निरंकुश देवताओं की पूजा करते थे। यहाँ तक कि यहूदी मन तक भी प्रेम के बजाय भय के माध्यम से पहुँचा जा सकता था। पृथ्वी पर मसीह का मिशन मनुष्यों को यह प्रकट करना था कि परमेश्वर एक तानाशाह नहीं थे, बल्कि एक स्वर्गीय पिता थे, जो अपने बच्चों के लिए प्यार और दया से भरे हुए थे। - पांडुलिपि 132,1902.
{1एमसीपी 183.1}

मूसा परमेश्वर की महिमा के सबसे करीब था, फिर भी वह अपने समय से आगे नहीं बढ़ सका और मिस्रियों को इस्राएल की तुलना में पिता की कम प्यारी संतानों के रूप में नहीं समझ सका। परन्तु प्रभु ने "अज्ञान के समय" को "नज़रअंदाज़" किया (प्रेरितों के काम 17:30) ताकि वह कुछ लोगों को लोहे की भट्टी से बचा सके (व्यवस्थाविवरण 4:20) और बाद में उन्हें उसकी महिमा के सामने निर्दोष प्रस्तुत कर सके (यहूदा 1:24) ताकि वे सभी राष्ट्रों के सामने इस बात की गवाही दे सकें और

उन्हें राष्ट्रों के मानव परिवार में अपने जेठे के रूप में आशीर्वाद दे सकें। मूसा के लिए, जंगल में 40 वर्षों के प्रशिक्षण के बाद, यह बहुत अधिक होगा कि वह न केवल युद्ध के माध्यम से इज़राइल के व्यक्तिगत उद्धार के लिए अपनी योजनाओं को छोड़ दे, बल्कि प्राकृतिक मनुष्य की उग्र राष्ट्रवादी सोच को भी छोड़ दे।

मिस्र के स्कूलों में, मूसा ने सर्वोच्च नागरिक और सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया। महान व्यक्तिगत आकर्षण, रूप और कद में महान, संवर्धित दिमाग और शाही व्यवहार, और एक सैन्य नेता के रूप में प्रसिद्ध, वह राष्ट्र का गौरव बन गए। मूसा अभी तक अपने जीवनकार्य के लिए तैयार नहीं था। उन्होंने अभी तक दिव्य शक्ति पर निर्भरता का सबक नहीं सीखा था। **उसने परमेश्वर के उद्देश्य को गलत समझा था। इस्राएल को हथियारों के बल पर मुक्त करने की उनकी आशा थी।** इसके लिए उन्होंने सब कुछ जोखिम में डाला और असफल रहे। हार और निराशा में वह भगोड़ा बन गया और एक अजीब देश में निर्वासित हो गया। {Ed 62}

मूसा ने सोचा कि इस्राएल के लोग युद्ध से मुक्त हो जाएंगे, और वह इब्रानी सेना के सिर पर खड़ा होगा, मिस्र की सेनाओं के खिलाफ युद्ध संचालित करने के लिए, और उत्पीड़न के जूए से अपने भाइयों को मुक्त करने के लिए। {ISP 165.1}

मूसा अपनी समझ के संबंध में इस्राएल के बाकी से बहुत आगे था। हालाँकि इस्राएलियों को मिस्र से शारीरिक रूप से हटा दिया गया था, 30 मसीह उनके जीवन में नहीं जी उठे थे। जब उन्होंने मिस्रियों को आते देखा तो उन्होंने खुलासा किया कि वे अभी भी विश्वास के लिए मर चुके थे।

जैसे-जैसे बल करीब आता गया, मिस्र के मेजबानों को पूरा पीछा करते देखा गया। आतंक ने इस्राएल के दिलों को भर दिया। कुछ ने यहोवा की दोहाई दी, **परन्तु अधिकतर ने मूसा से जल्दबाज़ी में शिकायत की।** "क्योंकि मिस्र में कब्रें नहीं थीं, क्या तू हमें जंगल में मरने के लिए ले गया है? तूने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया कि हम को मिस्र से निकाल ले जाए? इस्राएल की सेनाओं को प्रभु के सामने प्रतीक्षा में रखना कोई आसान बात नहीं थी। **अनुशासन और आत्म-नियंत्रण की कमी के कारण वे हिंसक और अनुचित हो गए।** उन्हें उम्मीद थी कि वे जल्द ही अपने उत्पीड़कों के हाथों में पड़ जाएंगे, और उनके विलाप और विलाप ज़ोर से और गहरे थे। आगे बढ़ने के लिए परमेश्वर के संकेत के रूप में बादल के अद्भुत स्तंभ का पालन किया गया था; लेकिन अब वे आपस में सवाल करते हैं कि क्या यह किसी बड़ी आपदा का पूर्वाभास नहीं कर सकता है;

क्योंकि क्या यह उन्हें पहाड़ के गलत तरफ, दुर्गम रास्ते पर नहीं ले जाता था? इस प्रकार ईश्वर का दूत उनके भ्रमित मन में आपदा के अग्रदूत के रूप में प्रकट हुआ। {पीपी 284}

हम इस कहानी में उन लोगों के साथ एक समानता देखते हैं जो कब्रों से बाहर आए थे जब मसीह की मृत्यु हो गई थी लेकिन अभी तक जी उठे नहीं थे।

उसी समय मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया। पृथ्वी काँप उठी। चट्टानें फट गयीं। कबरे खुल गयीं और बहुत-से मृत सन्तों के शरीर पुनर्जीवित हो गये। वे येशु के पुनरुत्थान के बाद कब्रों से निकले और पवित्र नगर जा कर बहुतों को दिखाई दिये। मत्ती 27:51-53

कई शरीर। केवल मैथ्यू ने यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने और जी उठने से जुड़ी इस घटना को दर्ज किया है। तुलना करें भजन संहिता 68:18; इफिसियों 4:8. यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि जब कब्रों को मसीह की मृत्यु के समय खोला गया था, तब पुनर्जीवित संत यीशु के उठने के बाद तक नहीं उठे थे (मत्ती 27:53) मत्ती 27:52

मूसा में बपतिस्मा

जब तक इस्राएल का विश्वास केवल मूसा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा दिए गए दृश्य साक्ष्य से शुरू हुआ था, तब तक प्रभु को अपने कानून के सिद्धांतों के अनुसार सही मायने में जीने के लिए उन्हें एक नया जीवन देने की अनुमति देना पर्याप्त नहीं था:

लेकिन अगर अब्राहमिक वाचा में छुटकारे का वादा था, तो सिनाई में एक और वाचा क्यों बनाई गई? अपने बंधन में लोगों को काफी हद तक परमेश्वर और अब्राहमिक वाचा के सिद्धांतों का ज्ञान खोना पड़ा। उन्हें मिस्र से मुक्त करके, परमेश्वर ने उन्हें अपनी शक्ति और अपनी दया प्रकट करने की कोशिश की, ताकि वे उससे प्रेम और विश्वास करने के लिए प्रेरित हो सकें। वह उन्हें लाल सागर में ले आया-जहाँ, मिस्र के लोगों द्वारा पीछा किया गया, पलायन असंभव लग रहा था-ताकि वे अपनी पूरी असहायता — उनकी दिव्य सहायता की आवश्यकता का एहसास कर सकें; और फिर उसने उनके लिए उद्धार किया। इस प्रकार वे परमेश्वर के प्रति प्रेम और कृतज्ञता और उनकी मदद करने की उनकी शक्ति पर विश्वास से भरे हुए थे। उन्होंने उन्हें लौकिक बंधन से मुक्त करने वाले के रूप में खुद से बांध लिया था। "" "[पीपी 371.2]

लेकिन उनके दिमाग पर प्रभावित होने के लिए और भी बड़ी सच्चाई थी। "मूर्तिपूजा और भ्रष्टाचार के बीच रहते हुए, उन्हें परमेश्वर की पवित्रता [चरित्र], अपने स्वयं के दिलों की अत्यधिक पापपूर्णता, अपने आप में, परमेश्वर के कानून का पालन करने में उनकी पूर्ण अक्षमता, और एक उद्धारक की उनकी आवश्यकता के बारे में कोई वास्तविक धारणा नहीं थी। यह सब उन्हें सिखाया जाना चाहिए। {पीपी 371.3}

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, इस्राएली ऐसे शरीर थे जिन्होंने मिस्र की कब्र को खोला था। लेकिन जैसे ही इस्राएल लाल सागर से गुजरे, उन्होंने मूसा के विश्वास में बपतिस्मा लिया और पहली बार, उन्होंने परमेश्वर में विश्वास व्यक्त करना शुरू किया।

भाइयो और बहिनो! मैं आप लोगों को याद दिलाना चाहता हूँ कि हमारे सभी पूर्वज बादल की छाया में चले, सब ने समुद्र पार किया, और इस प्रकार बादल और समुद्र का "बपतिस्मा" ग्रहण कर सब-के-सब मूसा के सहभागी बने। 1 कुरिन्थियों 10:1-2

उन्होंने [परमेश्वर] उन्हें किसी अन्य तरीके से बचाया होगा, लेकिन उन्होंने उनके विश्वास की परीक्षा लेने और उन पर उनके विश्वास को मजबूत करने के लिए यह तरीका चुना। ... उसी पानी की ओर उतरते हुए, उन्होंने दिखाया कि वे मूसा द्वारा कहे गए परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते हैं। {पीपी 290.1}

बपतिस्मा मृत्यु और पुनरुत्थान का प्रतीक है और लाल सागर के अनुभव में, इज़राइल को उनकी पूर्व गुलामी से मुक्त होना शुरू हो गया था और विश्वास का बीज अब उनमें बोया गया था क्योंकि उन्होंने मूसा का गीत एक साथ गाया था सबसे भयानक खतरे से।

एक रात पूरी तरह से मुक्ति लाई थी। उस विशाल, असहाय भीड़-युद्ध के लिए अप्रयुक्त बंधकों, महिलाओं, बच्चों और मवेशियों, उनके सामने समुद्र के साथ, और मिस्र की शक्तिशाली 32 सेनाओं ने पीछे दबते हुए-पानी के माध्यम से अपना रास्ता खोलते हुए देखा था और उनके दुश्मन अपेक्षित विजय के क्षण में अभिभूत हो गए थे। केवल **यहोवा ने ही उनका उद्धार किया था, और उनके हृदय कृतज्ञता और विश्वास से उसी की ओर मुड़ गए थे। उनकी भावनाओं को प्रशंसा के गीतों में व्यक्त किया गया।** परमेश्वर की आत्मा ने मूसा पर भरोसा किया, और उसने लोगों को धन्यवाद के एक विजयी गान में नेतृत्व किया, जो मनुष्य के लिए ज्ञात सबसे शुरुआती और सबसे उदात्त गानों में से एक है। {पीपी 288}

इज़राइल के लोगों के लिए लाल सागर की घटना एक नए जन्म के अनुभव का अवसर थी। परमेश्वर के वास्तविक चरित्र को देखने के लिए, उन्हें उस क्षण तक प्राप्त प्रकाश के अनुसार उस पर भरोसा करना था। यदि उन्हें विश्वास होता कि प्रभु, जो उन्हें अद्भुत रूप से मिस्र से बाहर ले आया था, उन्हें उनके उत्पीड़कों से बचाने में सक्षम था, तो वे अधिक विश्वास विकसित करते और इस तरह पिता के चरित्र को और अधिक देखने और प्रतिबिंबित करने में सक्षम होते। लाल सागर के अनुभव में लगाए गए बीजों ने लगभग पूरे इज़राइल के लिए स्थायी फल नहीं दिया। उसी पीढ़ी की पूरी कहानी ने स्पष्ट रूप से दिखाया कि वे अपने दिलों में प्रभु का अनुसरण नहीं करना चाहते थे:

अब मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं, हालांकि आप एक बार पूरी तरह से जानते थे, कि यीशु, जिसने मिस्र देश से एक लोगों को बचाया, बाद में उन लोगों को नष्ट कर दिया जो विश्वास नहीं करते थे। "(यहूदा 1:5)

उनके रेगिस्तान प्रवास की अवधि समाप्त होने के बाद, "लोग कादेश में रहते हैं।" गिनती 20:1 यहाँ मरियम की मृत्यु हो गई और उसे दफनाया गया। लाल सागर के तटों पर आनंद के उस दृश्य से लेकर जंगल की कब्र तक, जिसने जीवन भर भटकने का अंत किया-**ऐसे लाखों लोगों का भाग्य रहा था जो मिस्र से बड़ी उम्मीदों के साथ आए थे। पाप ने उनके होंठों से आशीर्वाद का प्याला बहा दिया था। क्या अगली पीढ़ी इससे सबक लेगी?** {EP 287.5}

इस पीढ़ी ने खुद को यीशु का अनुसरण करने के लिए तैयार नहीं दिखाया। लोगों ने मूसा के अनुभव का स्वाद चखा और बपतिस्मा लिया और इससे उनके लिए पूरी तरह से मसीह के पास आने का द्वार खुल गया। यदि वे विश्वास में बने रहते, तो उन्होंने वास्तव में नए जन्म का अनुभव किया होता:

भाइयो और बहिनो! मैं आप लोगों को याद दिलाना चाहता हूँ कि हमारे सभी पूर्वज बादल की छाया में चले, सब ने समुद्र पार किया, और इस प्रकार बादल और **समुद्र का "बपतिस्मा" ग्रहण कर सब-के-सब मूसा के सहभागी बने।** सब ने एक ही आध्यात्मिक भोजन ग्रहण किया और एक ही आध्यात्मिक पेय का पान किया, क्योंकि वे एक आध्यात्मिक चट्टान का जल पीते थे, जो उनके साथ-साथ चलती थी और वह चट्टान थी-मसीह। **फिर भी उन में से अधिकांश लोग परमेश्वर के कृपापात्र नहीं बन सके और निर्जन प्रदेश में ढेर हो गये।** 1 कुरिन्थियों 10:1-5

उसके [मसीह] में भी तुम्हारा खतना बिना हाथों के किया गया था, शरीर के शरीर को उतारकर, मसीह के खतना द्वारा, **बपतिस्मा में उसके साथ दफनाया गया था, जिसमें आप भी उसके साथ परमेश्वर के शक्तिशाली काम में विश्वास के माध्यम से जी उठे थे, जिसने उसे मरे हुआ में से उठाया था।** और तुम, जो अपने अपराधों और अपने शरीर के खतना न होने में मृत थे, **परमेश्वर ने उसके साथ मिलकर जीवित किया, हमारे सभी अपराधों को माफ कर दिया, ऋण के रिकॉर्ड को रद्द करके जो इसकी कानूनी मांगों के साथ हमारे खिलाफ खड़ा था। इसे उन्होंने एक तरफ रख दिया और इसे क्रूस पर लटकाया।** (कुलुस्सियों 2:11-14)

लाल सागर तक पहुँचने से पहले परमेश्वर और मसीह उन्हें क्षमा करने के लिए तैयार थे, फिर भी उसके चरित्र की अपनी कल्पनाओं के साथ वे इस पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं थे। उनके खिलाफ खड़े ऋण का रिकॉर्ड उनके पिता के बारे में उनकी पापी सोच के कारण था, जो उन्हें एक विध्वंसक के रूप में देखते थे, और उन्हें पूरी तरह से विश्वास करने और उनकी क्षमा प्राप्त करने की अनुमति नहीं देते थे।

अभयारण्य में रास्ते की तरह समुद्र में परमेश्वर का रास्ता

अब तक हमने देखा है कि इस्राएलियों का विश्वास बहुत कमजोर था और वे आग के स्तंभ, परमेश्वर की उपस्थिति का दृश्य प्रतीक, उनके और मिस्रियों के बीच रहने से पहले प्रभु पर भरोसा नहीं कर सकते थे। मूसा के विश्वास का भी परीक्षण किया गया था लेकिन एक अलग स्तर पर; उनसे अपेक्षा की गई थी कि वे इस्राएल को मुक्त करने के परमेश्वर के तरीके के बारे में अधिक समझेंगे और यह बल के नियम के अनुसार नहीं बल्कि उनके प्रेम के चरित्र के अनुरूप होना चाहिए:

लेकिन अब, जैसे ही मिस्र का मेजबान उनके पास आया, उन्हें एक आसान शिकार बनाने की उम्मीद में, बादलों का स्तंभ शानदार ढंग से आकाश में चढ़ गया, इस्राएलियों के ऊपर से गुजरा, और उनके और मिस्र की सेनाओं के बीच उतरा। पीछा करने वालों और उनका पीछा करने वालों के बीच अंधेरे की एक दीवार फंसी हुई थी। मिस्रवासी अब इब्रानियों के शिविर को नहीं समझ सकते थे, और उन्हें रुकने के लिए मजबूर होना पड़ा। लेकिन जैसे-जैसे रात का अंधेरा गहरा होता गया, बादलों की दीवार इब्रानियों के लिए एक बड़ी रोशनी बन गई, जिससे पूरे शिविर दिन की चमक से भर गया। {पीपी 284.3}

तब इस्राएल के दिलों में आशा लौट आई। तब मूसा ने यहोवा की ओर अपनी आवाज़ बुलंद की। तब यहोवा ने मूसा से कहा, **तू मुझ से क्यों चिल्लाता है?** इस्राएलियों से कह, कि आगे बढ़ें। परन्तु अपनी छड़ी उठाओ, और समुद्र पर अपना हाथ फैलाओ, और उसे विभाजित करो; और इस्राएल के पुत्र समुद्र के बीच से सूखी भूमि पर चलेंगे। {पीपी 287.1}

मिस्र में विपत्तियों के माध्यम से, मूसा को प्रभु के चरित्र के ज्ञान में आगे बढ़ने के लिए आमंत्रित किया गया था, यह महसूस करते हुए कि छड़ को सांप में बदलने का मतलब यह होगा कि प्रभु का चरित्र प्रकृति की शक्ति में नहीं बल्कि उसकी शक्ति में प्रकट होगा। मूसा और एलिय्याह, इस्राएल के सबसे महान नेता, प्रकृति के तत्वों के माध्यम से प्रकट प्रभु की शक्ति द्वारा परमेश्वर के लोगों को आध्यात्मिक पतन से बाहर लाने के लिए परमेश्वर के साधन थे, लेकिन उनके चरित्र के अनुसार नहीं। मूसा और एलिय्याह दोनों, अपने धर्मत्याग और दासता से इस्राएल को मुक्त करने में शक्ति की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति के बाद, 40 दिनों के लिए अलौकिक रूप से बने रहे और उसी पहाड़ पर प्रभु की महिमा देखने के लिए तैयार थे, जिसे सिनाई या होरेब कहा जाता था (निर्गमन 24:16-18; 34:28; 1 राजा 19:8) मूसा के मामले में, उन्हें पत्थर की पट्टियों पर उत्कीर्ण दस

आज्ञाओं के सही अर्थ के रहस्योद्घाटन से पहले झुकने के लिए प्रेरित किया गया था क्योंकि उन्हें परमेश्वर के दया के चरित्र के संदर्भ में रखा गया था:

मूसा ने प्रथम पट्टियों के समान पत्थर की दो पट्टियाँ खोदीं। वह सबेरे उठे। जैसी प्रभु ने उनको आज्ञा दी थी, उसी के अनुसार वह अपने हाथ में पत्थर की दो पट्टियाँ लेकर सीनय पर्वत पर चढ़ गए। प्रभु मेघ में उतरा। वह वहाँ मूसा के साथ खड़ा हुआ और उसने अपना “प्रभु” नाम घोषित किया। **प्रभु उनके सामने से निकला और उसने घोषित किया, ‘प्रभु! प्रभु! वह दयालु, और अनुग्रह करने वाला, विलम्ब-क्रोधी, अत्यन्त करुणामय, सत्य परमेश्वर है। वह हजारों पीढ़ियों पर करुणा करने वाला; अधर्म, अपराध और पाप को क्षमा करनेवाला है। किन्तु वह दोषी को किसी भी प्रकार निर्दोष सिद्ध न करेगा। वह पूर्वजों के अधर्म का दण्ड तीसरी और चौथी पीढ़ी तक उनकी संतान तथा आनेवाली संतान को देता रहता है।’** **मूसा ने भूमि की ओर अपना सिर अविलम्ब झुकाया, और प्रभु की वन्दना की। निर्गमन 34:4-8**

एलिय्याह के मामले में, होरेब पर, उसे एलिय्याह के बाल के भविष्यवक्ताओं के साथ हिंसक व्यवहार में प्रभु की शक्ति और उसके चरित्र के बीच का अंतर सिखाया गया था और उसकी उम्मीद थी कि प्रभु खुद को उसके सामने एक परमेश्वर के रूप में प्रकट करेगा जो आग से जवाब देता है।

यूहन्ना के लिए वही सत्य खोला गया जो रेगिस्तान में एलिय्याह के पास आया था, जब “एक बड़ी और तेज हवा ने पहाड़ों को तोड़ दिया, और प्रभु के सामने चट्टानों को तोड़ दिया; लेकिन परमेश्वर हवा में नहीं था; और हवा के बाद भूकंप आया; लेकिन परमेश्वर भूकंप में नहीं था; और भूकंप के बाद आग; लेकिन परमेश्वर आग में नहीं था; और आग के बाद, परमेश्वर ने नबी से “एक छोटी सी आवाज” से बात की। 1 राजा 19:11,12. इसलिए यीशु को अपना काम हथियारों के टकराव और सिंहासनों और राज्यों के पलटने के साथ नहीं करना था, बल्कि दया और आत्म-बलिदान के जीवन के माध्यम से मनुष्यों के दिलों से बात करना था। {डीए 217.2}

उद्धारक के शिष्यों की तरह, यूहन्ना बपतिस्ता मसीह के राज्य की प्रकृति को नहीं समझते थे। उसे उम्मीद थी कि यीशु दाऊद की गद्दी संभाल लेगा; और जैसे-जैसे समय बीतता गया, और उद्धारकर्ता ने शाही अधिकार का कोई दावा नहीं किया, जॉन उलझन में पड़ गया और परेशान हो गया। उसने लोगों के सामने घोषणा की थी कि यहोवा के सामने मार्ग तैयार करने के लिए, यशायाह की भविष्यवाणी पूरी होनी चाहिए: पहाड़ों और पहाड़ियों को नीचा किया जाना चाहिए,

टेढ़े-मेढ़े को सीधा किया जाना चाहिए, और उबड़-खाबड़ स्थानों को समतल किया जाना चाहिए। उन्होंने मानव गौरव और शक्ति के उच्च स्थानों को नष्ट करने की तलाश की थी। उन्होंने मसीहा को उस व्यक्ति के रूप में इंगित किया था जिसका पंखा उनके हाथ में था, और जो उनके फर्श को पूरी तरह से साफ करेगा, जो उनके गार्नर में गेहूं इकट्ठा करेगा, और अदूषित आग से भूसी को जला देगा। भविष्यवक्ता एलिय्याह की तरह, जिसकी आत्मा और शक्ति से वह इस्राएल के पास आया था, उसने खुद को आग से जवाब देने वाले परमेश्वर के रूप में प्रकट करने के लिए प्रभु की तलाश की। {215.2}

मूसा को पानी के लिए संदर्भित किया गया था, जब वह पानी से बाहर ले जाया गया था, उसने इस्राएल को इसके माध्यम से नेतृत्व किया और उन्हें जंगल में पानी दिया। एलिय्याह को आग के लिए संदर्भित किया गया था, क्योंकि उसने दो अवसरों पर स्वर्ग से आग लगाई थी और उसे एक अग्रिमय रथ में स्वर्ग में ले जाया गया था। इस प्रकार मूसा और एलिय्याह पूरे शास्त्र, कानून और भविष्यवक्ताओं, पुराने और नए नियम के लिए प्रतीक बन गए, जो प्रभु के लिए गवाही देते हैं:

उसमें जीवन था, और यह जीवन मनुष्यों की ज्योति था। फिलिप नतनएल से मिला और बोला, “जिनके विषय में मूसा ने व्यवस्था में और नबियों ने भी लिखा है, वह हमें मिल गये हैं। वह नासरत-निवासी, युसुफ के पुत्र येशु हैं।” योहन 1:4,45

मैं अपने दो साक्षियों को आदेश दूँगा कि वे उन बारह सौ साठ दिनों तक टाट ओढ़े नबूवत करते रहें।” ये साक्षी वे जैतून के दो पेड़ और दो दीपाधार हैं, जो पृथ्वी के प्रभु के सामने खड़े हैं। यदि कोई इन्हें हानि पहुँचाना चाहता है, तो इनके मुख से आग निकलती है और वह इनके शत्रुओं को नष्ट कर देती है। [एलिय्याह] जो इन्हें हानि पहुँचाना चाहेगा, उसे इसी प्रकार मरना होगा। इन्हें आकाश का द्वार बन्द करने का अधिकार है, ताकि इनकी नबूवत के समय पानी नहीं बरसे। इन्हें पानी को रक्त में बदलने का और जब-जब ये चाहें, तब-तब पृथ्वी पर हर प्रकार की महामारी भेजने का अधिकार है। [मूसा] प्रकाशन 11:3-6

यहाँ हमारे लिए महत्वपूर्ण सबक यह है कि इन दो गवाहों की गवाही शक्ति की अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रभु के चरित्र के लिए हमारे कदमों का मार्गदर्शन करती है, फिर भी मूसा और एलिय्याह को स्वयं परमेश्वर के अहिंसक राज्य की सच्ची प्रकृति के बारे में सिखाया जाना चाहिए। अभयारण्य के दरबार में दो वस्तुएँ थीं: बलिदान की वेदी और गुफा। पहला आग (एलिय्याह) और दूसरा पानी

(मूसा) से जुड़ा था। वे अभयारण्य में प्रवेश करने की तैयारी कर रहे थे। इससे पता चलता है कि मूसा की सेवकाई और एलिय्याह की सेवकाई दोनों ही लोगों को परमेश्वर के चरित्र की अधिक समझ की ओर ले जाने के लिए थीं, फिर भी नेताओं को स्वयं भी इसमें निर्देश दिए जाने की आवश्यकता थी। यदि इस्राएल अपने नेता का आज्ञाकारी होता, तो प्रभु उन्हें अपने चरित्र के रहस्योद्घाटन की ओर ले जाता जैसा कि उनके अभयारण्य के सबसे पवित्र स्थान में दिखाया गया है:

फिलिप नतनएल से मिला और बोला, “जिनके विषय में मूसा ने व्यवस्था में और नबियों ने भी लिखा है, वह हमें मिल गये हैं। वह नासरत-निवासी, यूसुफ के पुत्र येशु हैं।” योहन 1:45

और मैं अपने दो गवाहों को अधिकार दूंगा, और वे टाट पहने एक हजार दो सौ साठ दिन की भविष्यद्वाणी करेंगे।

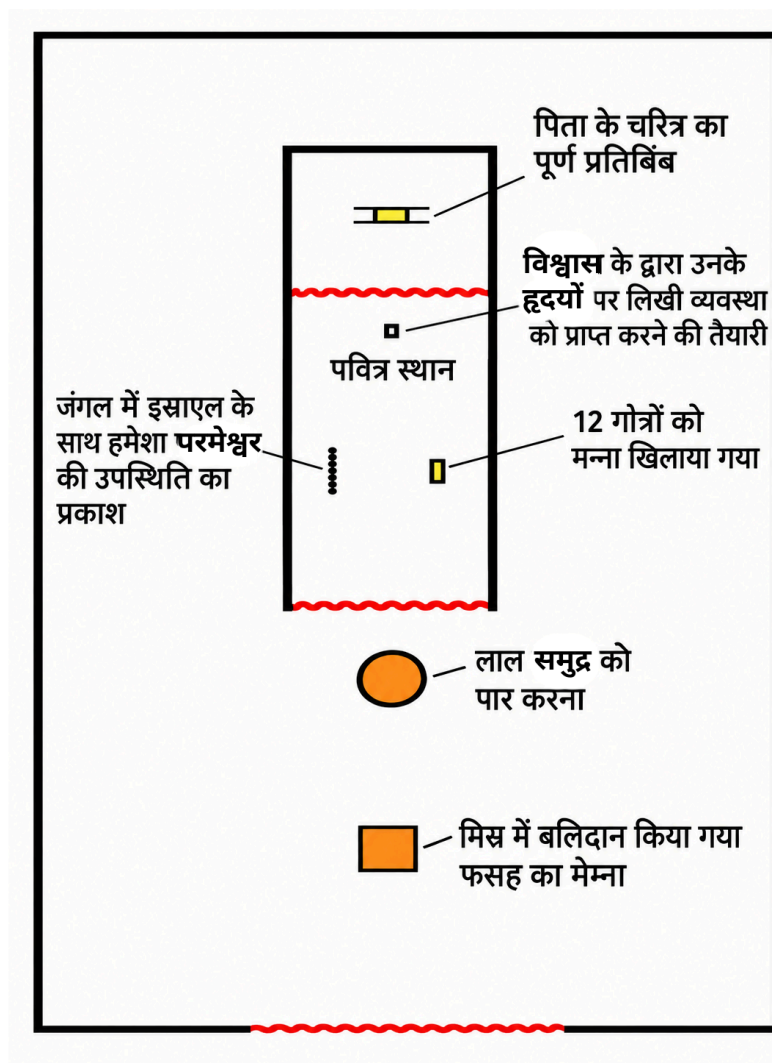
ये दो जैतून के पेड़ और दो मोमबत्तियाँ हैं जो पृथ्वी के परमेश्वर के सामने खड़ी हैं। और यदि कोई उन्हें हानि पहुँचाना चाहे, तो उनके मुँह से आग निकलकर उनके शत्रुओं को भस्म कर देगी [एलियाह] और यदि कोई उन्हें हानि पहुँचाना चाहे, तो वह इस रीति से मारा जाए। उनके पास आकाश को बन्द करने का अधिकार है, कि उनकी भविष्यद्वाणी के दिनों में वर्षा न हो : और उन्हें जल पर अधिकार है, कि उन्हें लहू में बदल दें, और जितनी बार वे चाहें पृथ्वी को सब विपत्तियों से मार डालें। [मूसा] (प्रकाशितवाक्य 11:3-6)

अभयारण्य में हमें इज़राइल का रास्ता दिखाया गया है क्योंकि परमेश्वर ने अपने वास्तविक चरित्र के रहस्योद्घाटन के माध्यम से उन्हें शारीरिक और आध्यात्मिक बंधन से बाहर निकालने की योजना बनाई थी। आइए हम इस बात को ध्यान में रखें कि पवित्र स्थान के मार्ग में प्रकट किए गए सबक की गलत व्याख्या इस्राएलियों को इस बिंदु पर ले गई होगी कि उनकी पापपूर्ण सोच से परमेश्वर को दिए गए अत्याचारों को निश्चित रूप से उसके चरित्र के एक अविभाज्य भाग के रूप में माना गया होगा। तब यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि निर्गमन के लगभग 450 साल बाद, सुलैमान के मंदिर के पवित्रीकरण पर, इस्राएल ने एक पूजा प्रणाली के साथ सद्भाव में अनंत संख्या में जानवरों का बलिदान दिया जो एक रक्तपिपासु देवता को खुश करता है और संतुष्ट करता है (1 राजा 8:5,63,64) जो, उनकी चेतना में, मिस्र के जेठे को मारा था। इस समझ के साथ, इज़राइल ने दिखाया है कि उन्होंने न केवल सिंक्लिनिंग वॉशबेसिन के सबक को स्वीकार नहीं किया, जो उनके अनुभव में लाल सागर का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि परमेश्वर के कानून के दर्पण जैसी गुणवत्ता

के माध्यम से इस समझ को भी व्यापक बनाया है, क्योंकि यह कांस्य वॉशबेसिन के समुद्र में परिवर्तन में प्रकट होता है:

जो व्यक्ति वचन सुनता है, किन्तु उसके अनुसार आचरण नहीं करता, वह उस मनुष्य के सदृश है जो दर्पण में अपना प्राकृतिक चेहरा देखता है। याकूब 1:23

फिर उन्होंने ढलवां धातु का समुद्र बनाया। यह गोल था, किनारे से किनारे तक दस हाथ (लगभग 5 मीटर) और पाँच हाथ (लगभग 2,50 मीटर) ऊंचा था, और तीस हाथ (लगभग 15 मीटर) की एक रेखा ने इसकी परिधि को मापा। (1 राजा 7:23)



तो अब जब हमारे मन में यह सब है, आइए हम देखें कि कैसे इज़राइल प्रकृति के तत्वों से गुजरा और इसे परमेश्वर के प्रेम के चरित्र से अलग किया जब पानी पीछे हट गया और मिस्त्रियों को डुबो दिया:

"और प्रभु ने मूसा से कहा, तुम मुझे क्यों पुकारते हो? इस्राएलियों से कह, कि आगे बढ़ें। परन्तु अपनी छड़ी उठाओ, और समुद्र पर अपना हाथ फैलाओ, और उसे विभाजित करो; और इस्राएल के पुत्र समुद्र के बीच से सूखी भूमि पर चलेंगे। परमेश्वर चाहेगा कि मूसा यह समझे कि वह अपने लोगों के लिए काम करेगा-कि उनकी आवश्यकता ही उसका अवसर होगा। जब वे जहाँ तक जा सकते थे, उन्हें आगे बढ़ने का आदेश देना चाहिए; ताकि वह पानी को विभाजित करने के लिए परमेश्वर द्वारा दी गई छड़ी का उपयोग कर सके। {1SP 207.2}

भजनहार ने इस्राएल के द्वारा समुद्र के मार्ग का वर्णन करते हुए गाया, "तेरा मार्ग समुद्र में था, और तेरे मार्ग विशाल जल में थे, और तेरे पदचिह्न ज्ञात नहीं थे। आप एक झुंड की तरह अपने लोगों का नेतृत्व किया, मूसा और हारून के हाथ से "(भजन संहिता 77:19,20, R.V.)। जैसे ही मूसा ने अपनी छड़ी बढ़ाई, पानी अलग हो गया, और इस्राएल सूखी भूमि पर समुद्र के बीच में चला गया, जबकि पानी दोनों तरफ एक दीवार की तरह खड़ा था।
{पीपी 287.2}

यहाँ एलेन व्हाइट उसी भजन से उद्धृत करता है जो कहता है कि परमेश्वर का "मार्ग, पवित्रस्थान में है" (भजन 77:13) लेकिन आगे भजन में यह धारणा लाल सागर पर लागू होती है। यह इस विचार की पुष्टि करता है कि इस्राएल के लिए लाल सागर का अनुभव ईश्वर के वास्तविक चरित्र को जानने का एक तरीका होना चाहिए था। हम आगे देखते हैं कि पानी मूसा द्वारा अपनी छड़ फैलाने के माध्यम से विभाजित किया गया था, वही प्रक्रिया जो मिस्र में विपत्तियों के साथ थी। इस इशारे के प्रारंभिक उद्देश्य के बाद, हमें उम्मीद करनी होगी कि परमेश्वर की शक्ति का उपयोग इस तरह से किया जाएगा जो मसीह के बजाय शैतान के चरित्र को दर्शाता है। अब शैतान का चरित्र मिस्त्रियों के माध्यम से व्यक्त किया जाएगा और प्रकृति के तत्वों में प्रकट होगा:

"मिस्र के लोगों ने उनका पीछा किया और समुद्र के बीच तक उनके पीछे चले, अर्थात् फिरौन के सभी घोड़े, उसके रथ और सवार। और ऐसा हुआ, कि प्रातःकाल यहोवा ने अग्नि स्तंभ और बादल के बीच से मिस्त्रियों की सेना की ओर देखा, और मिस्त्रियों की सेना को परेशान किया। उनकी

चकित आँखों के सामने रहस्यमय बादल आग के स्तंभ में बदल गया। गड़गड़ाहट शुरू हो गई और बिजली चमक उठी। "बादलों ने पानी बहाया; आकाश ने एक आवाज़ सुनाई: आपके तीर भी बह गए। बवंडर में तेरी गड़गड़ाहट की आवाज़ आई; बिजली ने दुनिया को रोशन कर दिया; पृथ्वी कांप गई और हिल गई। भजन संहिता 77:17,18, R.V. {पीपी 287.3}

प्रकृति ने अपने निवासियों के हिंसक चरित्रों के बारे में जो खुलासा करना शुरू कर दिया था, उसकी निरंतरता अब लाल सागर में गड़गड़ाहट, बिजली, बादलों के माध्यम से प्रकट होगी, जो आकाश द्वारा भेजे गए पानी और ध्वनि को बहाते थे।

परमेश्वर के हाथ में, प्रकृति परमेश्वर के नियमों के उल्लंघनकर्ताओं के खिलाफ सेवा करती है। वह अपने विनाशकारी तत्वों को तब तक अपनी गोद में रखती है जब तक कि वे मनुष्य को नष्ट करने और पृथ्वी को शुद्ध करने के लिए आगे नहीं बढ़ेंगे। जब फिरौन ने मूसा और हारून के ज़रिए परमेश्वर की अवज्ञा की और कहा, "यहोवा कौन है कि मैं उसकी बात सुनूं? ? मैं प्रभु को नहीं जानता, न ही मैं इस्राएल को जाने दूंगा", प्रकृति ने अपने घायल निर्माता के साथ अपनी सहानुभूति व्यक्त की, और यहोवा के अपमान का बदला लेने के लिए परमेश्वर के साथ सहयोग किया। फिरौन के जिद्दी प्रतिरोध के कारण सारा मिस्र उजाड़ हो गया था। --पत्र 209,1899.

मिस्रवासियों के राक्षसी क्रोध को प्रकृति में उसी तरह प्रकट होने दिया गया था जैसे शिष्यों के परेशान विचार गलील के समुद्र में तूफान में प्रकट हुए थे:

वे अशांत पानी के बीच में थे। उनके विचार तूफानी और अनुचित थे, और परमेश्वर ने उन्हें उनकी आत्माओं को पीड़ित करने और उनके दिमाग पर कब्जा करने के लिए कुछ और दिया। परमेश्वर अक्सर ऐसा तब करता है जब मनुष्य अपने लिए बोझ और परेशानियाँ पैदा करते हैं। शिष्यों को परेशान करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। पहले से ही खतरा तेजी से आ रहा था। एक हिंसक तूफान उन पर चोरी कर रहा था, और वे इसके लिए तैयार नहीं थे। यह एक अचानक विरोधाभास था, क्योंकि दिन एकदम सही था; और जब आंधी ने उन्हें मारा, तो वे डर गए। {डीए 380}

कुछ शिष्यों के तूफानी विचारों ने एक हिंसक तूफान पैदा करने में सक्षम थे, 600 रथों की फिरौन की बदला लेने वाली सेना की तो बात ही छोड़िए। फिर भी मिस्रवासियों के लिए लाल सागर में जो हुआ वह एक क्रोधित परमेश्वर की आवाज़ की तरह लग रहा था:

मिस्रवासी भ्रम और निराशा से घिर गए। तत्त्वों के क्रोध के बीच, जिसमें उन्होंने एक क्रोधित परमेश्वर की आवाज सुनी, उन्होंने अपने कदम पीछे हटाने और उस तट पर भागने का प्रयास किया जिसे उन्होंने छोड़ दिया था। {पीपी 287.4}

अपना हाथ समुद्र के ऊपर फैलाएं

फिर हम कैसे सोच सकते हैं कि परमेश्वर ने मिस्र के लोगों को लाल सागर में मारना चाहा था? ऐसा इसलिए है क्योंकि जब हम मसीह को "परमेश्वर का मारा हुआ और पीड़ित" मानते हैं (यशायाह 53:4) तो इस प्रकार हम मिस्र के लोगों को विपत्तियों और लाल सागर में परमेश्वर द्वारा मारा गया मानते हैं। फिर भी हमारा पिता एक हत्यारा नहीं है और वह अपने कानून की छठी आज्ञा का पालन करता है जो कहता है कि "तू हत्या न कर।" फिर हम इस आदेश की व्याख्या कैसे कर सकते हैं:

प्रभु ने मूसा से कहा, 'अपना हाथ समुद्र की ओर फैला जिससे जल मिस्र-निवासियों पर, उनके रथों और घुड़सवारों पर लौट आए।' निर्गमन 14:26

यह जानते हुए कि मसीह ने अपने पिता के चरित्र को पूरी तरह से प्रकट किया जब वह पृथ्वी पर थे, और उन्होंने कभी किसी को नहीं मारा, तो हम निश्चित रूप से जान सकते हैं कि इस आदेश का उद्देश्य मिस्रियों को मारना नहीं था। इस कहानी के कुछ समय बाद, मूसा को एक तरफ खड़े होने का आदेश दिया गया, जबकि इस्राएल को नष्ट कर दिया जाएगा। यह दूसरी घटना थी जब मूसा को किसी राष्ट्र की नियति तय करने के लिए आमंत्रित किया गया था:

प्रभु मूसा से बोला, 'जा, नीचे उतर जा! **तेरे लोग**, जिन्हें तू मिस्र देश से निकाल लाया है, भ्रष्ट हो गए हैं। जिस मार्ग पर चलने के लिए मैंने उनको आज्ञा दी थी, उससे वे इतने शीघ्र भटक गए। उन्होंने अपने लिए बछड़े की मूर्ति बनाई है। उन्होंने उसकी पूजा की, उसको बलि चढ़ाई और कहा, "ओ इस्राएली समाज! यह है तेरा ईश्वर, जो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया है।" प्रभु ने मूसा से आगे कहा, 'मैंने इन लोगों को देखा है। ये ऐंठी गरदन के लोग हैं। **अब तू मुझे अकेला छोड़ दे कि मेरी क्रोधाग्नि उनके विरुद्ध प्रज्वलित हो और मैं उनको भस्म करूँ। परन्तु मैं तुझको एक महान् राष्ट्र बनाऊंगा।**' मूसा ने अपने प्रभु परमेश्वर का क्रोध शान्त करते हुए उससे विनती की, 'हे प्रभु, क्यों तेरी क्रोधाग्नि तेरे लोगों के विरुद्ध प्रज्वलित हुई है, जिसे तू अपने महान् सामर्थ्य और भुजबल के द्वारा मिस्र देश से निकाल लाया है? मिस्र निवासी क्यों यह बात कहें, कि तू उन्हें बुरे उद्देश्य से, पहाड़ों पर उनका वध करने के लिए, धरती की सतह से उन्हें मिटा डालने के लिए मिस्र देश से निकाल लाया था? अतएव अपनी क्रोधाग्नि को शान्त कर, और अपने लोगों की हानि का विचार छोड़ दे। अपने सेवक अब्राहम, इसहाक और इस्राएल को स्मरण कर, जिनसे तूने स्वयं अपनी शपथ खाई थी, और उनसे कहा था, "मैं तुम्हारे वंश को आकाश के तारों के सदृश असंख्य

करूँगा। मैं यह समस्त देश, जिसकी प्रतिज्ञा मैंने की थी, तेरे वंश को प्रदान करूँगा। वे उस पर सदा अधिकार रखेंगे।” अतः अपने लोगों की जो हानि प्रभु करने वाला था, उसका विचार उसने छोड़ दिया। निर्गमन 32:7-14

लेकिन मूसा ने आशा के लिए आधार को समझा जहाँ केवल हतोत्साहित और क्रोध दिखाई दिया। परमेश्वर के शब्द, "मुझे अकेला छोड़ दो", वह मना करने के लिए नहीं बल्कि मध्यस्थता को प्रोत्साहित करने के लिए समझता था, जिसका अर्थ था कि मूसा की प्रार्थनाओं के अलावा कुछ भी इज़राइल को बचा नहीं सकता था, लेकिन अगर इस तरह से अनुरोध किया जाता है, तो परमेश्वर अपने लोगों को छोड़ देंगे... परमेश्वर ने संकेत दिया था कि उन्होंने अपने लोगों को अस्वीकार कर दिया था। उसने उनके बारे में मूसा से कहा था, "तुम्हारे लोग, जिन्हें तुम मिस्र से बाहर ले आए थे।" लेकिन मूसा ने नम्रतापूर्वक इस्राएल के नेतृत्व को अस्वीकार कर दिया। वे उसके नहीं थे, बल्कि परमेश्वर के थे-"तेरे लोग, जिन्हें तू ने उत्पन्न किया है... बड़ी शक्ति और शक्तिशाली हाथ से। जैसे ही मूसा ने इस्राएल के लिए मध्यस्थता की, उनकी डरपोकता उन लोगों के लिए उनकी गहरी रुचि और प्रेम में खो गई, जिनके लिए उनके पास, परमेश्वर के हाथों में, इतना कुछ करने का साधन था। परमेश्वर ने उनकी दलीलें सुनीं, और उनकी निःस्वार्थ प्रार्थना को स्वीकार किया। परमेश्वर ने अपने सेवक को साबित कर दिया था; उसने उस गलती करने वाले, कृतघ्न लोगों के लिए अपनी वफादारी और अपने प्यार की परीक्षा ली थी, और मूसा को विनम्रता से परीक्षण सहना पड़ा था। इस्राएल में उनकी रुचि बिना किसी स्वार्थी उद्देश्य के पैदा हुई। {पीपी 318,319}

जैसा कि हम उपरोक्त परिच्छेद से देखते हैं, इस घटना में मूसा की निःस्वार्थता का परीक्षण किया गया था क्योंकि प्रभु इस्राएल के प्रति दया दिखाने के लिए एक कारण खोज रहे थे, हालांकि वे इसके योग्य नहीं थे। यहाँ मूसा की प्रतिक्रिया लाल सागर के किनारे की तुलना में बहुत अलग है। वह अपने लोगों के लिए मध्यस्थता कर रहे थे। हम इस बात पर भी ध्यान देते हैं कि परमेश्वर की उसकी छवि एक क्रोधित व्यक्ति की है जिसे तर्कों द्वारा और पिताओं से किए गए अपने वादों के बारे में याद दिलाकर और इस्राएल के उन्मूलन की स्थिति में अन्य राष्ट्रों के सामने परमेश्वर के नाम पर आने वाली शर्म से खुश करने की आवश्यकता है। यह देखना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर ने उसे ठीक करने की कोशिश नहीं की। यह हमारे स्वर्गीय पिता के व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रति प्रेम और सम्मान को प्रकट करता है। जब उन्हें ऐसा करने के लिए नहीं कहा जाता तो वह अपने वास्तविक चरित्र के बारे में अपने रहस्योद्घाटन को कभी नहीं थोपते। बाद के एक अवसर पर, जब इस्राएल ने

यह विश्वास करने से इनकार कर दिया कि प्रभु उन्हें प्रतिज्ञात भूमि देंगे, तो मूसा ने फिर से अपने लोगों के लिए मध्यस्थता की, फिर भी प्रभु ने अंततः इस्राएल को उनकी पसंद पर छोड़ दिया:

तब समस्त इस्राएली मंडली उच्च स्वर में भय से चिल्ला उठी। लोग रात-भर रोते रहे। सब इस्राएली मूसा और हारून के विरुद्ध बक-बक करने लगे। उन्होंने मूसा और हारून से कहा, 'भला होता कि हम मिस्र देश में मर जाते! अथवा इसी निर्जन प्रदेश में मर जाते! क्यों प्रभु हमें उस देश में ले जाना चाहता है? क्या तलवार से मार डालने के लिए? वे हमारी पत्नियों और बच्चों को हम से लूट लेंगे। यह हमारे लिए अच्छा है कि हम मिस्र देश को लौट जाएँ।' प्रभु ने मूसा से कहा, 'ये लोग कब तक मेरा तिरस्कार करते रहेंगे? जो अद्भुत कार्य मैंने इनके मध्य किए, उनको देखकर भी ये कब तक मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे? मैं महामारी के द्वारा इनको मार डालूंगा, और इनको उत्तराधिकार से वंचित करूंगा। किन्तु मैं तुझे एक ऐसे राष्ट्र का पिता बनाऊंगा जो इन इस्राएलियों से अधिक महान् और बलवान राष्ट्र होगा।' जन-गणना 14:1-3,11-12

लेकिन मूसा ने फिर अपने लोगों के लिए विनती की। वह उन्हें नष्ट करने के लिए सहमत नहीं हो सकता था, और उसने खुद एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाया... प्रभु ने इस्राएल को तत्काल विनाश से बचाने का वादा किया; लेकिन उनके अविश्वास और कायरता के कारण वह उनके दुश्मनों को वश में करने की अपनी शक्ति को प्रकट नहीं कर सके। इसलिए अपनी दया में उन्होंने उन्हें, एकमात्र सुरक्षित मार्ग के रूप में, लाल सागर की ओर लौटने का आदेश दिया। अपने विद्रोह में लोगों ने कहा था, "काश हम इस जंगल में मर जाते!" अब यह प्रार्थना दी जानी थी। प्रभु ने घोषणा की: "जैसा कि आपने मेरे कानों में कहा है, वैसे ही मैं आपके साथ करूंगा : आपके शव इस जंगल में गिरेंगे, और सभी जो आपकी पूरी संख्या के अनुसार गिने गए थे, बीस साल और उससे अधिक उम्र के...। लेकिन मैं तुम्हारे बालकों को, जिन्हें शिकार होने के लिए कहा था, वहाँ ले जाऊंगा और वे उस देश को जान लेंगे जिसे तुम नापसंद करते थे। {पीपी 39:1.2}

यहां तक कि जब मूसा ने इस्राएल के बच्चों के जीवन के लिए अपील की, जब उसने विनती की कि अगर परमेश्वर उन्हें माफ नहीं कर सकते हैं तो जीवन की पुस्तक से अपना नाम मिटा देना परमेश्वर के न्याय के बारे में गलत दृष्टिकोण दिखाता है। यह इस्राएल के लिए एक अद्भुत प्रेम दिखाता था लेकिन यह प्रेम अभी भी इस गलतफहमी के तहत काम कर रहा था कि परमेश्वर का न्याय मृत्यु की माँग करता है।

इन दो अवसरों से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि मूसा को भी परमेश्वर के चरित्र को जानने की उसकी क्षमता के अनुसार नेतृत्व किया गया था, और परमेश्वर ने उसकी आंशिक समझ के लिए उसकी निंदा नहीं की थी क्योंकि वह अपने समय के लिए अपने प्रकाश के अनुसार प्रभु का अनुसरण कर रहा था। तो फिर यहोवा ने मूसा को समुद्र पर अपना हाथ बढ़ाने की आज्ञा क्यों दी, क्योंकि वह जानता था कि वह मिस्रियों के लिए उस तरह सिफ़ारिश नहीं करेगा जैसे उसने इस्राएल के लिए की थी?

ईसा मसीह का लाल सागर दफन

मिस्रवासियों को उनके स्वयं के निर्णय के अनुसार न्याय किया जाना था:

“दोष नहीं लगाओ, जिससे तुम पर भी दोष न लगाया जाये; क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा। मत्ती 7:1-2

यदि कोई मेरी शिक्षा सुन कर उस पर नहीं चलता, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता हूँ; क्योंकि मैं संसार को दोषी ठहराने नहीं, बल्कि संसार का उद्धार करने आया हूँ। जो मेरा तिरस्कार करता और मेरी शिक्षा ग्रहण करने से इन्कार करता है, उसको दोषी ठहराने वाला एक है : जो वचन मैंने कहा है, वही उसे अन्तिम दिन दोषी ठहराएगा। योहन 12:47-48

यहाँ हम देखते हैं कि प्रभु को मिस्रवासियों को परमेश्वर के बारे में उनके दृष्टिकोण से न्याय करने की अनुमति देनी थी। फिरौन ने उस सभी प्रकाश को फेंक देने का फैसला किया है जो उसके पास आएगा यदि उसने इस्राएल को जाने देने की प्रभु की विनती का पालन किया होता, और इस प्रकार उसने वास्तव में मसीह को पिता के प्रतिनिधि के रूप में अपने दृष्टिकोण से पूरी तरह से बंद कर दिया। अब उसे और उसके लोगों को परमेश्वर के बारे में उनके दृष्टिकोण पर छोड़ दिया जाएगा, और इसलिए हम देखते हैं कि फिरौन अपने दासों को वापस लेने के लिए दौड़ रहा है, यह न जानते हुए कि यह उसका अपना राष्ट्र था जो शारीरिक रूप से लाल सागर में मसीह के दफन को प्रकट करेगा:

प्रभु ने मूसा से कहा, ‘तू मेरी दुहाई क्यों दे रहा है? इस्राएलियों को आगे बढ़ने का आदेश दे। अपनी लाठी उठा। अपना हाथ समुद्र की ओर फैला और उसे दो भागों में विभाजित कर जिससे इस्राएली समुद्र के मध्य सूखी भूमि पर जा सकें। मैं मिस्र-निवासियों का हृदय हठीला कर दूंगा जिससे वे इस्राएलियों का पीछा करते हुए समुद्र के मध्य जाएँ। तब मैं फरओ, उसकी समस्त सेना, उसके रथों और घुड़सवारों को पराजित कर अपनी महिमा करूंगा। जब मैं फरओ, उसके रथों और घुड़सवारों पर विजय प्राप्त करूँगा तब मिस्र-निवासियों को ज्ञात होगा कि मैं प्रभु हूँ।’ निर्गमन 14:15-18

फिरौन और मिस्र के लोगों ने अपने दिलों की कठोरता और इस्राएलियों को फिर से हासिल करने की कोशिश के माध्यम से खुद को पूरी तरह से शैतान के हाथों में सौंप दिया था। इस प्रकार जब लोग मूर्तिपूजा का चयन करते हैं, तो परमेश्वर ईर्ष्यालु परमेश्वर प्रतीत होते हैं। मनुष्यों को उनकी पसंद की अनुमति देने और उन्हें अस्वीकार करने वालों की रक्षा करने से उनकी आत्मा को हटाने से परमेश्वर का क्रोध प्रकट होता है। शैतान, विध्वंसक को तब अपने विनाश का काम करने की अनुमति दी जाती है और विनाश का श्रेय परमेश्वर को उनके प्रतिशोध के प्रदर्शन के रूप में दिया जाता है। हमें स्पष्ट रूप से बताया गया है कि परमेश्वर राष्ट्रों के साथ कैसे व्यवहार करता है और परमेश्वर का प्रतिशोध क्या है:

परमेश्वर राष्ट्रों के साथ हिसाब रखता है। एक गौरैया भी उसकी सूचना के बिना जमीन पर नहीं गिरती। "जो लोग अपने साथियों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं, वे कहते हैं," "परमेश्वर कैसे जानता है?" **एक दिन लंबे समय से स्थगित प्रतिशोध का सामना करने के लिए बुलाया जाएगा।** इस युग में परमेश्वर को आम से अधिक तिरस्कार दिखाया जाता है। पुरुष अपमान और अवज्ञा के एक बिंदु पर पहुँच गए हैं जो दर्शाता है कि उनका अधर्म का प्याला लगभग भर गया है। **कई लोगों ने दया की सीमा को लगभग पार कर लिया है। जल्द ही परमेश्वर दिखा देंगे कि वह वास्तव में जीवित परमेश्वर हैं। वह स्वर्गदूतों से कहेगा, "अब शैतान को नष्ट करने के उसके प्रयासों में उसका मुकाबला न करें। वह आज्ञा न मानने वालों पर अपनी दुष्टता का बोझ डाले, क्योंकि उनके अधर्म का प्याला भर गया है।** वे दुष्टता के एक स्तर से दूसरे स्तर तक बढ़ गए हैं, जिससे उनकी अधर्म दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। मैं अब विध्वंसक को अपना काम करने से रोकने के लिए हस्तक्षेप नहीं करूंगा। {आरएच, सितंबर 17, 1901 पैरा. 8}

प्राकृतिक मनुष्य के दृष्टिकोण से, परमेश्वर को फिरौन की हार के माध्यम से सम्मान मिलता प्रतीत होता है। इस तरह आसपास के राष्ट्र इस घटना को समझेंगे। यहाँ तक कि इस्राएल खुद भी घटनाओं में देखता है कि परमेश्वर एक युद्ध का आदमी है जिसने मिस्रियों को नष्ट कर दिया।

प्रभु योद्धा है; उसका नाम प्रभु है। 'उसने फरओ के रथों तथा उसकी सेना को समुद्र में फेंक दिया; फरओ के श्रेष्ठ नायक लाल सागर में डूब गए। अथाह जल-प्रवाह ने उन्हें ढांप लिया; वे पत्थर के सदृश गहरे सागर में डूब गए। हे प्रभु, तेरा दाहिना हाथ बल से विभूषित है; हे प्रभु, तेरा दाहिना हाथ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करता है। निर्गमन 15:3-6

ईश्वर की महिमा मनुष्य की सोच के अंधेरे में डूबी हुई है। शारीरिक मनुष्य के लिए परमेश्वर की महिमा भस्म करने वाली आग के समान है और जैसे मनुष्य न्याय करता है वैसे ही उसका न्याय किया जाता है। पुत्र के माध्यम से पिता के चरित्र से आने वाले प्रकाश को मिस्र के लोग पूर्ण अंधेरे के रूप में समझेंगे:

तब परमेश्वर का दूत, जो इस्राएल की छावनी के आगे-पीछे जाता था, हटकर उनके पीछे हो लिया; और बादल का खम्बा उनके सम्मुख से निकलकर उनके पीछे खड़ा हो गया; और वह मिस्रियों की छावनी और इस्राएल की छावनी के बीच आ गया; और उन पर बादल और अंधेरा छा गया, परन्तु रात को उन पर प्रकाश पड़ा. और रात भर एक दूसरे के निकट न आया। (निर्गमन 14:19-20)

वह बादल जो मिस्रियों के लिए अंधेरे की दीवार था, इब्रानियों के लिए प्रकाश की एक बड़ी बाढ़ थी, जो पूरे शिविर को रोशन करती थी, और उनके सामने के रास्ते पर चमक बहाती थी। इसलिए प्रोविडेंस के व्यवहार अविश्वास, अंधेरा और निराशा लाते हैं, जबकि भरोसेमंद आत्मा के लिए वे प्रकाश और शांति से भरे होते हैं। जिस रास्ते पर परमेश्वर चलते हैं वह रेगिस्तान या समुद्र के माध्यम से हो सकता है, लेकिन यह एक सुरक्षित रास्ता है। {पीपी 290.3}

परमेश्वर अपने चरित्र को नहीं बदलता है, फिर भी मिस्रवासी उसके बारे में अपने विचारों के अनुसार इसे समझते हैं। जब लाल सागर के बड़े पानी विभाजित हो गए और इस्राएली समुद्र के बीच में चले गए, तो उसने उन्हें इस बपतिस्मा में प्रवेश करने से रोकने की कोशिश की, फिर भी उन्होंने अपने दिल को कठोर कर दिया और इसलिए कुछ अलग देखा:

रात्रि के अन्तिम पहर में प्रभु ने अग्नि और मेघ के स्तम्भ में से मिस्र सेना पर दृष्टिपात किया। प्रभु ने मिस्र सेना को भयाकुल बना दिया। उसने उनके रथों के पहिए धंसा दिए जिससे उनका चलना कठिन हो गया। मिस्र-निवासी कहने लगे, 'आओ, इस्राएलियों के पास से भाग जाँ; क्योंकि प्रभु उनकी ओर से हमसे युद्ध कर रहा है।' निर्गमन 14:24-25

लेकिन इसके बावजूद कि परमेश्वर ने अपनी अतुलनीय शक्ति से विवाद को जन्म दिया था, फिरौन ने इस कदम से पश्चाताप किया [लोगों को जाने दिया], और अपने योद्धाओं के साथ भाग रहे इस्राएलियों को वापस लाने के लिए उनका पीछा किया, और उस मार्ग में प्रवेश करने का

प्रयास किया जो परमेश्वर के लोगों के बचने के लिए प्रदान किया गया था, वह और उसका मेजबान लाल सागर में मारे गए।
{YI 15 अप्रैल, 1897, पैरा. 6}

मिस्रवासियों ने उस मार्ग पर चलने का साहस किया जो परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए तैयार किया था, और परमेश्वर के दूत उनकी सेना के माध्यम से गए और उनके रथ के पहियों को हटा दिया। वे परेशान थे। उनकी प्रगति बहुत धीमी थी, और वे परेशान होने लगे। उन्होंने उन निर्णयों को याद किया जो इब्रानियों के परमेश्वर ने मिस्र में उन पर लाए थे, ताकि उन्हें इस्राएलियों को जाने देने के लिए मजबूर किया जा सके, और उन्होंने सोचा कि परमेश्वर उन सभी को इस्राएलियों के हाथों में सौंप सकता है। उन्होंने निश्चय किया कि परमेश्वर इस्राएलियों के लिए लड़ रहा है, और वे बहुत डर गए, और उनके पास से भागने के लिए मुड़ रहे थे, जब यहोवा ने मूसा से कहा, "अपना हाथ समुद्र के ऊपर फैलाओ, ताकि पानी फिर से मिस्रियों, उनके रथों और सवारों पर आ जाए।"
{ISP 209.2}

मिस्रवासियों ने फैसला किया कि प्रभु इस्राएल के लिए लड़ रहे थे क्योंकि यह उनके चरित्र के बारे में उनकी धारणा थी। यह ठीक इसी संदर्भ में था, जब उन लोगों को बचाने के लिए और कुछ नहीं किया जा सकता था। वे एक क्रोधित परमेश्वर के अलावा और कुछ नहीं देख सकते थे जो अपने दुश्मनों के लिए लड़ रहा था:

मिस्र के लोग भ्रम और निराशा से अभिभूत थे। तत्वों के क्रोध के बीच, जिसमें उन्होंने एक क्रोधित परमेश्वर की आवाज सुनी, उन्होंने अपने कदम पीछे हटाने और उस तट पर भागने का प्रयास किया जिसे उन्होंने छोड़ दिया था। लेकिन मूसा ने अपनी छड़ी फैला दी, और ढेर किए हुए पानी, चिल्लाते हुए, गर्जना करते हुए, और अपने शिकार के लिए उत्सुक, एक साथ दौड़े और मिस्र की सेना को उनकी काली गहराई में निगल लिया। 287.4

तब मूसा को आज्ञा मिली, कि वह अपना हाथ समुद्र पर फैलाए, कि जल मिस्रियों पर फिर से आए। यहोवा मूसा से कुछ कहे बिना पानी छोड़ सकता था, फिर भी इन लोगों को उनके न्याय के अनुसार न्याय किया जाना था। मूसा एक समय उनका गर्व और आनंद था जैसा कि उनके स्कूलों में बल के

कानून में शिक्षित किया गया था, इसलिए उन्हें अंततः इसी कानून के माध्यम से न्याय किया जाएगा:

मिस्र के सैन्य स्कूलों में, **मूसा को बल का कानून सिखाया गया था**, और इस शिक्षा ने उनके चरित्र पर इतनी मजबूत पकड़ बनाई थी कि **प्रेम के कानून** द्वारा इज़राइल के नेतृत्व के लिए उन्हें फिट करने के लिए परमेश्वर और प्रकृति के साथ चालीस साल की शांति और सहभागिता की आवश्यकता थी। {एड 65.2}

यह प्रभु नहीं था जो यह चाहता था, उसने केवल मूसा के माध्यम से उनकी सोच को प्रतिबिंबित किया, जिसने यह भी सोचा कि प्रभु इस्राएल के लिए लड़ रहा था। हालाँकि उनकी मूर्तिपूजा, मिस्रवासियों ने अंततः प्रभु को अपने पुत्र की शक्ति को लाल सागर में उनके साथ दफनाने की अनुमति देकर, मूसा के माध्यम से अपने सिर पर अपने अधर्म का दौरा करने के लिए मजबूर किया। इस मृत्यु के माध्यम से शैतान पर विजय प्राप्त की गई:

परिवार की समस्त सन्तति का रक्त-मांस एक ही होता है, इसलिए येशु ने भी हमारा रक्त-मांस धारण किया, जिससे वह अपनी मृत्यु द्वारा मृत्यु पर अधिकार रखने वाले शैतान को परास्त करें।
इब्रानियों 2:14

“तूने अपनी सामर्थ्य से समुद्र को दो भागों में बाँट दिया; तूने जल में रहने वाले अजगरों के सिर कुचल डाले। तूने लेव्यातान के सिरों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और उसे जंगल में रहने वाले लोगों के भोजन के लिए दे दिया।”। भजन संहिता 74:3-14

लाल सागर की घटना में परमेश्वर ने एक पिता के प्रिय गुणों से खुद को अलग कर लिया और एक न्यायाधीश का चरित्र ग्रहण किया। उन्होंने इस चरित्र को सभी लोगों की धारणा के माध्यम से ग्रहण किया। इस अंधेरे में डूबे हुए, मसीह को आध्यात्मिक रूप से क्रूस पर चढ़ाया गया और मिस्र की सेना की मृत्यु में दफनाया गया।

लाल सागर के अनुभव के माध्यम से ईसा मसीह ने जो मार्ग बनाया है, वह मन की भयावहता और पीड़ा को दर्शाता है उन्होंने मानवता के बचने का रास्ता खोलने में पीड़ा झेली। इस्राएल इस बपतिस्मा में प्रवेश करने में सक्षम था क्योंकि उन्होंने विश्वास में अपने नेता मूसा का अनुसरण किया

लेकिन मिस्रवासी इस बपतिस्मा को सहन नहीं कर सके। जैसे ही सैनिक पानी से अभिभूत थे, यह उन दुष्टों की वास्तविकता को दर्शाता है जो दुःख के बीच अपने अपराधबोध से अभिभूत हैं। यही कारण है कि लाल सागर की इस कहानी का उपयोग अंत में शैतान की मृत्यु के उदाहरण के रूप में किया जाता है।

तू बुद्धिमान व्यापारी है; तूने व्यापार से अपनी धन-सम्पत्ति बढ़ाई है। इस धन-सम्पत्ति के कारण तेरा हृदय घमण्ड से फूल उठा है। अतः स्वामी-प्रभु यों कहता है : तू अपने को ईश्वर के समान बुद्धिमान समझता है; इसलिए मैं तुझ पर एक ऐसे विदेशी राष्ट्र से आक्रमण कराऊंगा, जो विश्व के सब राष्ट्रों में सब से अधिक निर्दयी है। उसके सैनिक तेरी बुद्धि के सौन्दर्य को, तेरे देश की शोभा को तहस-नहस करने के लिए तलवार चलाएंगे। वे तुझे मौत के गड्ढे में फेंक देंगे; **वे तलवार से तेरा वध करेंगे, और तेरा शव समुद्र के मध्य में पड़ा होगा।** यहजकेल 28:5-8

शैतान इस तरह क्यों मरता है? क्योंकि वह उस सजा का सामना करेगा जो उसने कहा था कि परमेश्वर को करनी चाहिए।

शैतान का न्याय उसके स्वयं के न्याय के विचार से किया जाएगा। यह उनका आग्रह था कि हर पाप को उसकी सजा मिलनी चाहिए। अगर परमेश्वर ने सजा माफ कर दी, तो उन्होंने कहा, वह सत्य या न्याय के परमेश्वर नहीं थे। शैतान उस न्याय का सामना करेगा जिसे उसने कहा था कि परमेश्वर को करना चाहिए। {12MR 413.1}

इसी तरह फ़रोह ने न्याय के अपने विचार का सामना किया। परमेश्वर ने उसके अपने अधर्म का दौरा उस पर किया। परमेश्वर ने फिरौन को आग के स्तंभ से रोकने की कोशिश की और अपने स्वर्गदूतों को उनके रथ के पहियों को उतारने के लिए भेजा। फिर भी उन्होंने अपने दिलों को कठोर कर लिया और पानी में चले गए। यही वह समय था जब उन्होंने महसूस किया कि इस्राएल का परमेश्वर उनके खिलाफ लड़ रहा था। उनके अपने विचारों से उनका न्याय किया गया और उन्हें वह न्याय मिला जो उन्होंने सोचा था कि एक युद्धरत परमेश्वर करेंगे।

पानी में उन सैनिकों द्वारा अनुभव किए गए आतंक को मसीह ने महसूस किया था। उन्होंने अंतिम समय तक उनके साथ दुःख झेला और इस प्रकार दिए गए फिरौती मूल्य के माध्यम से, इस्राएल को

छुड़ा लिया गया। इस्राएल के मुक्त होने के लिए मसीह ने अपने मिस्र के बेटों को खोने की पीड़ा झेली। इस प्रकार क्रॉस की कहानी लाल सागर की कहानी में प्रकट होती है।

निष्कर्ष

यूसुफ के समय से, शैतान अपने वफादार बच्चों के माध्यम से परमेश्वर के चरित्र से निकलने वाले प्रकाश का मुकाबला करने की कोशिश कर रहा था ताकि मिस्र में कोई भी अपने स्वर्गीय पिता के दया और प्रेम के सच्चे चरित्र का ज्ञान प्राप्त न कर सके। फिर भी मिस्र द्वारा इसे स्वीकार करने से इनकार करने के बावजूद वह इस प्रकाश को पूरी तरह से ग्रहण करने में सक्षम नहीं था। प्रेरणा हमें सूचित करती है कि यूसुफ से निर्गमन के बीच के समय में कई लोग पश्चाताप के साथ सच्चे परमेश्वर के पास आए।

सार्वभौमिक धर्मत्याग ने परमेश्वर के निर्णयों को तत्काल और अपरिहार्य बना दिया और शैतान को लोगों और जानवरों को सीधे परमेश्वर को मारने के कार्य का श्रेय देकर परमेश्वर के चरित्र को गलत तरीके से प्रस्तुत करने का मौका दिया। क्योंकि ईश्वर अपने सभी तरीकों में न्यायपूर्ण है, वह अपने चरित्र के रहस्योद्घाटन को थोप नहीं सकता था क्योंकि ऐसा करने से उसे दोषी ठहराया जाएगा कि वह कुछ ऐसा करता है जिसके लिए उसे नहीं कहा गया था। इसलिए परमेश्वर ने मिस्रियों के पापों के प्राकृतिक परिणामों को विपत्तियों में प्रकृति के माध्यम से व्यक्त करने की अनुमति दी। पिता ने अपने पुत्र में अपनी शक्ति को शैतान द्वारा मिस्र के विनाश में एक व्यापक अवधि के लिए उपयोग करने की अनुमति दी ताकि अपने धर्मत्यागी बच्चों के लिए उनकी अपील और भी प्रमुख हो सके। लेकिन यह उनके और मसीह के लिए एक बड़ी पीड़ा थी क्योंकि उनकी शक्ति का उपयोग उनके चरित्रों के विपरीत किया गया था। फिर भी परमेश्वर के लिए मिस्र और इस्राएल दोनों से अपने बच्चों को अधिक मौका देने और साथ ही अपने राज्य के न्यायपूर्ण सिद्धांतों को बनाए रखने का यही एकमात्र तरीका था। प्रेरणा निम्नलिखित विचार के साथ मिस्र में कहानी का समापन करती है:

प्रतिज्ञा के बच्चों को शैतान की दमनकारी शक्ति से बचाने में, मसीह को यह दिखाना था कि परमेश्वर के अपरिवर्तनीय गुणों के बावजूद, जिन पापियों ने परमेश्वर का अपमान किया है, उन्हें उसके पक्ष में वापस लिया जा सकता है, अगर वे अपनी वफादारी की ओर लौटते हैं, और फिर भी उसका सम्मान बिना किसी नुकसान के रखा जाए। यह स्पष्ट किया जाएगा कि सत्य और न्याय उसके सिंहासन का निवास स्थान हैं, और यहोवा की व्यवस्था की बड़ाई होगी। {YI 15 अप्रैल, 1897, पैरा. 11}

इस प्रकार मिस्र में जो हुआ वह पूरे ब्रह्मांड से बहुत रुचि के साथ देखा जाने वाला एक क्षेत्र बन गया

वहाँ कोई दूत नहीं था, लेकिन वह मनुष्य के छुटकारे के रहस्य को उन सभी कठिनाइयों के माध्यम से देखना चाहता था जो उसे घेरती प्रतीत होती थीं। पूरे स्वर्ग ने उस महान और अद्भुत योजना को देखा, जो पूरी पृथ्वी को घेरने के लिए इतनी बड़ी थी, और इतनी गहराई से रखी गई थी कि शैतान की एजेंसियों की ताकत इसके खिलाफ प्रबल नहीं हो सकी। {YI 15 अप्रैल, 1897, पैरा. 12}

क्रॉस के रहस्य के बिना मिस्र में पिता के निर्णयों को उनके चरित्र के अनुरूप समझना सीमित मन के लिए असंभव होगा, जो अन्य सभी रहस्यों की व्याख्या करता है:

मन इस पर अनुमान लगा सकता है, और इसे समझने में विफल हो सकता है; क्योंकि संघर्ष में तय किया जाने वाला महान मामला केवल परमेश्वर और मनुष्य के बीच नहीं था; परमेश्वर ने जो भी प्राणी बनाया था वह संघर्ष में शामिल था। **अधूरे संसारों ने देखा कि परमेश्वर के चरित्र को केवल दो शक्तियों के इस परीक्षण और संघर्ष के माध्यम से ही सिद्ध किया जा सकता है। ईश्वर के गुण प्रकट होने चाहिए। उनकी सरकार की स्थिरता पर कोई सवाल नहीं होना चाहिए। और परमेश्वर के पुत्र ने स्वयं अन्धकार के राजकुमार और उसके सभी सहयोगियों पर विजय प्राप्त करने के लिए काम को अंत तक आगे बढ़ाने का प्रस्ताव रखा।** "यह कौन है जो एदोम से बोसरा से रंगीन वस्त्र लेकर आया है? यह वही है जो अपने परिधान में महिमावान है, अपनी शक्ति की महानता में यात्रा कर रहा है? **मैं जो धर्म से बोलता हूँ, उद्धार करने में पराक्रमी हूँ।** तुम अपने वस्त्रों में लाल क्यों हो, और अपने वस्त्र उस के समान क्यों हो जो शराब पर चलता है? मैं ने अकेले ही दाखमधु के कुंड को कुचला है, और लोगों में से कोई भी मेरे साथ नहीं था; क्योंकि मैं अपने क्रोध में उन्हें कुचल दूंगा, और अपने क्रोध में उन्हें रौंद दूंगा; **और उनका लोहू मेरे वस्त्रों पर छिड़का जाएगा, और मैं अपने सारे वस्त्रों को दाग दूंगा।** क्योंकि प्रतिशोध का दिन मेरे मन में है, और मेरे छुड़ाए हुए लोगों का वर्ष आ गया है। और मैं ने देखा, और सहायता करनेवाला कोई न था; और मुझे आश्चर्य हुआ कि सहायता करनेवाला कोई न था; इसलिये मेरी भुजा ने मुझे उद्धार किया, और मेरे क्रोध ने मुझे सँभाल लिया। {YI 15 अप्रैल, 1897, पैरा. 13}

हम मसीह के इन शब्दों को कैसे समझेंगे? उन्होंने उन लोगों के खून को अपने कपड़ों पर छिड़कने और अपने सभी कपड़ों पर दाग लगाने की अनुमति क्यों दी? उन्होंने अपने और अपने पिता के चरित्र को गलत तरीके से प्रस्तुत करने की अनुमति क्यों दी जैसे कि वे मिस्रवासियों की मौत के लिए दोषी थे? हम निश्चित रूप से जानते हैं कि लाल सागर की योजना परमेश्वर द्वारा मिस्रियों के लिए एक दफन स्थान के रूप में नहीं, बल्कि केवल पाप के लिए एक दफन स्थान के रूप में बनाई गई थी क्योंकि बपतिस्मा के बारे में यही सब है। हम पिता से प्रार्थना करते हैं कि इस पुस्तक का प्रकाश आपको क्रूस के रहस्य में इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए दृढ़ संकल्पित करेगा:

क्रॉस का रहस्य अन्य सभी रहस्यों की व्याख्या करता है। कलवारी से निकलने वाले प्रकाश में ईश्वर के गुण सुंदर और आकर्षक दिखाई देते हैं जिन्होंने हमें भय और भय से भर दिया था। दया, कोमलता और माता-पिता के प्रेम को पवित्रता, न्याय और शक्ति के साथ मिश्रित होते देखा जाता है। जब हम उनके सिंहासन की महानता को देखते हैं, जो ऊँचा और ऊँचा है, तो हम उनके चरित्र को इसकी उदार अभिव्यक्तियों में देखते हैं, और उस प्रिय उपाधि, "हमारे पिता" के महत्व को समझते हैं, जैसा पहले कभी नहीं था। {GC 652.1}

ईसा मसीह का लाल सागर दफन

मिस्र की सेना का विनाश इस बात के सबसे स्पष्ट प्रमाणों में से एक है कि ईश्वर एक विध्वंसक है। यहाँ तक कि मूसा के गीत में भी हमें बताया गया है कि, भगवान एक युद्ध करने वाले व्यक्ति हैं जो अपने दुश्मनों को टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं

प्रभु योद्धा है; उसका नाम प्रभु है। 'उसने फरओ के रथों तथा उसकी सेना को समुद्र में फेंक दिया; फरओ के श्रेष्ठ नायक लाल सागर में डूब गए। अथाह जल-प्रवाह ने उन्हें ढांप लिया; वे पत्थर के सदृश गहरे सागर में डूब गए। हे प्रभु, तेरा दाहिना हाथ बल से विभूषित है; हे प्रभु, तेरा दाहिना हाथ शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करता है। निर्गमन 15:3-6

परमेश्वर युद्ध का आदमी कैसे हो सकता है और साथ ही एक पुत्र भी हो सकता है जो शांति का राजकुमार हो? क्या एक ही फव्वारे से मीठा और कड़वा पानी बह सकता है? क्या परमेश्वर का जीवन और मृत्यु एक साथ मिश्रित हैं? क्या उनका चरित्र यिन और यांग जैसा है?

भाइयो और बहिनो! मैं आप लोगों को याद दिलाना चाहता हूँ कि हमारे सभी पूर्वज बादल की छाया में चले, सब ने समुद्र पार किया, और इस प्रकार बादल और समुद्र का "बपतिस्मा" ग्रहण कर सब-के-सब मूसा के सहभागी बने। 1 कुरिन्थियों 10:1-2

क्या आप लोग यह नहीं जानते कि येशु मसीह का जो बपतिस्मा हम सब को मिला है, वह उनकी मृत्यु का बपतिस्मा है? रोमियों 6:3

यदि लाल सागर का अनुभव इस्राएल के लिए एक बपतिस्मा था तो यह मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के संबंध को प्रकट करता है। यह शैतान के अंतिम विनाश में एक खिड़की भी देता है

इसलिए मैं तुझ पर एक ऐसे विदेशी राष्ट्र से आक्रमण कराऊंगा, जो विश्व के सब राष्ट्रों में सब से अधिक निर्दयी है। उसके सैनिक तेरी बुद्धि के सौन्दर्य को, तेरे देश की शोभा को तहस-नहस करने के लिए तलवार चलाएंगे। वे तुझे मौत के गड्ढे में फेंक देंगे; वे तलवार से तेरा वध करेंगे, और तेरा शव समुद्र के मध्य में पड़ा होगा। यहजेकेल 28:7-8

क्रॉस के रहस्य के भीतर, लाल सागर के रहस्य को अपना वास्तविक अर्थ मिल जाएगा । इसके बिना हम केवल दर्पण के माध्यम से अंधेरे में देख सकते हैं ।